गायत्री जयन्ती
हमें युगसंजीवनी गायत्री को युगशक्ति बनाने की प्रतिबद्धता दर्शानी होगी 2

26 मई-गृहे-गृहे यज्ञ अभियान

योग का तत्त्वदर्शन जनजीवन में उतरे 3-6

गायत्री परिवार का गौरव

डॉ. शगुन गोयल अमेरिका में 'वूमन ऑफ द ईयर' के लिए नामांकित 7

श्रद्धेया जीजी-डॉ. साहब के विवाह की स्वर्ण जयंती

युगशक्ति गायत्री के वैश्विक विस्तार की यात्रा के 50 वर्ष 8

गायत्री और योग अन्योन्याश्रित हैं।

7वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर भारत सरकार की बैठक में शान्तिकुञ्ज की भागदारी 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 जून 2021

वर्ष : 33, अंक : 24
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : ..... 12 जून 2021
वार्षिक चंदा : ..... ₹60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ..... ₹ 800/-
प्रति अंक : ..... ₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

निष्काम कर्मयोग
सर्वोत्तम जीवन दर्शन

युगऋषि वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

स्वर्ग-मुक्ति सहज है

कर्म ही वह केन्द्रीय धुरी है जिस पर इस सृष्टि का गतिचक्र अविराम घूम रहा है। जीवित रह सकें, इसके लिये कर्म आवश्यक ही नहीं, आनिवार्य भी है। मनुष्येतर निम्न श्रेणी के प्राणियों में यह प्रकृति-प्रेरणा से परिचालित है और उदरपूर्ति, वंशवृद्धि एवं निज की रक्षा तक ही सीमित है। उनके लिए सुख-दुःख की उच्चस्तरीय वैचारिक चेतना के परिष्कार, समष्टि से एकाकार होने की आत्मिक अनुभूतियाँ निरर्थक एवं परे हैं, लेकिन परम सत्ता के इस विश्व उद्यान में सर्वाधिक श्रेष्ठ एवं वरिष्ठ मानव मानसिक और बौद्धिक दृष्टि से परिपूर्ण विकसित होने के कारण एन्द्रिक सुखों की लघु परिधि में सीमित नहीं रह सकता। उसे उच्चस्तरीय इन्द्रियातीत परम आनन्द की तलाश है, जिसके लिए अल्पज्ञतावश इस सांसारिक मृग मरीचिका में भटकता है।

इस भटकाव से मुक्ति पाने, निज के स्वरूप को पहचानने के लिए ऋषि-मनीषियों ने ज्ञानयोग, भक्तियोग एवं कर्मयोग का मार्ग अपनाने हेतु निर्देशित किया है। इनमें कर्मयोग राजमार्ग की तरह सुप्रशस्त है, क्योंकि यह हर मनोभूमि के व्यक्तियों एवं वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल है। इसमें न तो भूलभुलैयों की दुरूहता है, न ही भटकाव की कोई गुजांइश। यदि कर्मयोगयुक्त जीवन जी सकना सम्भव हो सके तो इसी जीवन में स्वर्ग एवं मोक्ष जैसी स्थिति का आनन्द पा सकना सबके लिए सम्भव है।

कर्म निष्काम हो, तब वह जीव और ब्रह्म को एकीकृत कर देने वाला योग बन जाता है, क्योंकि कामनाओं से जकड़े रहना ही 'भव-बंधन' है और इनसे छूटना ही 'मुक्ति'। ईशावास्योपनिषद् का ऋषि भी उपरोक्त उद्घोष करता हुआ कहता है ***'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा'***। अर्थात् इस विश्व उद्यान में विहार तो करें, इसका उपयोग करें पर निर्लिप्त होकर, निष्काम भाव से।

ईश्वरार्पण बुद्धि

निष्काम कर्मयोग की प्रथम अनिवार्यता है ईश्वरार्पण बुद्धि से कर्म हो। निष्काम कर्मयोग के सुविस्तीर्ण राजपथ पर चलने वाला पथिक निज की इच्छाओं, वासनाओं को परमसत्ता के प्रति समर्पित कर देता है। उसका जीवन संकीर्ण स्वार्थ की पूर्ति के लिए नहीं, अपितु भागवत चेतना के इस विश्व-उद्यान को अधिकाधिक पुष्पित-पल्लवित करने तथा इसे सुन्दर से सुन्दरतम बनाने में होता है। वह अपने कर्तव्यों के प्रति सतत जागरूक एवं तत्पर रहता है। उनको भली प्रकार निर्वाह में उसे अनिर्वचनीय परम सुख की अनुभूति होती है। इस प्रकार वह निरन्तर कर्म में निरत रहता हुआ दिखाई देने पर भी अन्तर्मन में पूर्णतया अनासक्त होता है।

गीताकार ने इसी को ***'समत्व'*** भी कहा है और सभी प्रकार के योगों में इसे उत्कृष्ट बताया है। 'समत्व' का तात्पर्य है समान भाव, चित्तवृत्तियों की चंचलता का सहज निरोध। जिसे योगदर्शन के प्रणेता पतंञ्जलि ने ***'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'*** कहकर समझाया है। चित्त का चंचल होना कर्मों में बाधा, व्यतिरेक पैदा करता है। हानि-लाभ, यश-अपयश, सुख-दुःख की उलझनों में जिसका मन सदा ही उलझा रहता है, जय होने पर जिसका अभिमान अस्सी गुना बढ़ जाता है, पराजय से जिसका मनोबल चूर-चूर हो जाता है, उससे सही ढंग से कर्म नहीं हो सकते। जो हर परिस्थिति में उद्विग्नताओं से रहित होकर दृढ़ मनोबल से परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पित भाव से कर्म करता है, वह ही इस समत्व भाव की, निष्काम कर्मयोग की सच्ची आराधना करता है।

भ्रान्तियों से बचें, भटकें नहीं

कर्म के परिणाम के प्रति अनासक्त होना इस दृष्टि से भी आवश्यक है कि मनुष्य का अधिकार क्षेत्र मात्र कर्म करने तक ही सीमित है। फल इस सीमा से बाहर है। इस महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया का संचालन सूत्र किन्हीं अदृश्य हाथों में ही है। कई बार ऐसा होता है कि अच्छे कर्म करने पर भी परिणाम अनुकूल नहीं होते। बीच में ऐसे विघ्न, व्यतिरेक आ जाते हैं जिनका निवारण मानवी सामर्थ्य से परे है। पर यह है वस्तुतः अदृश्य कर्मों के ही फल, जो पूर्व जन्मों में सम्पादित किए गए हैं। जो कर्मफल की शाश्वत व्यवस्था के अनुसार कालान्तर में विविध रूपों में प्रकट होते हैं। वर्तमान जीवन एवं इससे सम्बद्ध भली-बुरी उपलब्धियाँ मात्र इसी जीवन की नहीं, अपितु पूर्व संचित कर्मों का भी परिणाम है।

कुछ लोग निष्काम कर्मयोग के संदर्भ में भ्रान्त धारणाएँ बना बैठे हैं। ये लोग विवेक को ताक पर रखकर कहते हैं कि जो भी कर्म हम करते हैं उनका कराने वाला तो परमात्मा है। वह काम अच्छा है या बुरा, इससे हमें क्या चिन्ता? इस भ्रान्त धारणा का पोषण करने से मनुष्य कर्म और अकर्म के बीच विभेद नहीं कर पाता। फलतः उत्थान की जगह पतन का पथ ही प्रशस्त होता है।

परमात्मा ने मानव को विवेक-बुद्धि प्रदान कर कर्मों का अधिष्ठाता बनाया है। वह चाहे तो सत्कर्मों का सत्पथ अपना कर आत्मिक प्रगति के आलोकमय पथ पर चले अथवा दुष्कर्मों के कुमार्ग पर चलकर अवनति और पतन के गहरे अंधेरे गर्त में समा जाय। भले-बुरे कर्मों का उत्तरदायी वह स्वयं ही है, न कि परमात्मा। सत्यं शिवं सुन्दरम् से युक्त परमसत्ता भला दुष्कर्मों की प्रेरणाएं दे भी कैसे सकती हैं? ऐसी प्रेरणाएँ तो मनुष्य के अपवित्र एवं कलुषित मन की उपज हैं। उस दिव्य सत्ता का प्रतीक प्रतिनिधि 'आत्मा' तो नित्य-निरन्तर उच्चस्तरीय प्रेरणाएँ सम्प्रेषित करता है, जो मन की उपेक्षा-अवेहलना के कारण व्यवहार जगत में नहीं आ पातीं। अतएव कर्माकर्म का दायित्व अपने ऊपर न मानना निष्काम कर्मयोग के अर्थ का अनर्थ करना ही है।

अनासक्त कर्मयोग

'अनासक्त कर्मयोग' यह शब्द ही अपना वास्तविक अर्थ सुस्पष्ट करता है। 'अनासक्ति' का तात्पर्य है राग, द्वेष से विरक्ति। कोई भी कर्म, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, किया जाय तो उसमें कर्त्तत्व का छुद्र अभिमान न जोड़ा जाय। यह अभिमान ही पापों का मूल है और उसकी उत्पत्ति का एकमात्र कारण है आसक्ति।

दूसरा शब्द है 'कर्मयोग'। गीताकार ने इसकी व्याख्या 'योगः कर्मसु कौशलम्' (कर्मों में कुशलता ही योग है) कह कर की है और कार्यकुशल वही हो सकता है जिसे अनुचित और उचित कर्मों के अन्तर का परिपूर्ण ज्ञान हो। इस 'कुशल' शब्द से वस्तुतः सत्यं शिवं सुन्दरम् की त्रिवेणी प्रवाहित है। अतएव कार्यकुशलता में किसी भी तरह अशुभ-अशिव की गुंजाइश ही नहीं है।

अनासक्त कर्मयोग का सही माने में तात्पर्य यही है कि काम को पूरी कुशलता के साथ छुद्र अहंकार का त्याग कर किया जाय और उसके फल में स्पृहा न हो। इस निष्काम कर्म योग के तत्त्वदर्शन को हृदयंगम करके इस सुप्रशस्त, भागवत चेतना के दिव्य आलोक से आलोकित राजमार्ग पर चलकर कोई भी इस संसार में रहते हुए आत्मिक उत्कर्ष के चरम शिखर पर आरूढ़ हो सकता है और जीवन मुक्ति का, परमानन्द का रसास्वादन कर सकता है।

(वाङ्मय 31/3.14-3.16 से संकलित, सम्पादित)

"निरन्तर कर्म करना, पर उसमें पूर्ण अनासक्ति; यही है जीवन का केन्द्रीय भाव। चाहे परिस्थितियाँ कितनी ही दुरूह व कंटकाकीर्ण क्यों न हों, यहाँ तक कि मौत के मुँह में जाकर भी बिना तर्क-वितर्क किए मानव एवं मानवता की सेवा और सहायता के लिए तत्पर रहो। क्षुद्र स्वार्थों की बेड़ियाँ तोड़ दो, भले ही वे सोने की हो क्यों न हों?

सम्पूर्ण विश्व 'शिव' का स्वरूप ही है। आसक्ति को त्याग कर, आत्मबल का अवलम्बन लेकर इसकी सेवा करना इसे उत्कृष्ट बनाना ही कर्मयोग का सही स्वरूप है। ***'शिव भावे जीव सेवा'*** इस महामंत्र को हृदयंगम करने पर ही कर्मयोग की व्याख्या समझ में आ सकती है।

- स्वामी विवेकानन्द, कर्मयोग के सुप्रसिद्ध व्याख्याकार

युग संजीवनी गायत्री

माँग निरन्तर बढ़ रही है, जनमानस अपनाने को आतुर है
हमें इसे युगशक्ति बनाने की प्रतिबद्धता दर्शानी होगी

सम्पादकीय

अग्नि परीक्षा का समय

बात सन् 1992, प्रथम अश्वमेध महायज्ञ, जयपुर के दिनों की है। गाँव-गाँव रजवंदन समारोह हो रहे थे, घर-घर संपर्क अभियान चल रहा था। उन दिनों यह अभियान अभूतपूर्व था। इससे पहले शायद ही अपने परिजन गाँव-गाँव, घर-घर तक पहुँचे हों। हर कार्यकर्त्ता देव संस्कृति दिग्विजय के उल्लास से ओतप्रोत था, जिसने कभी दिन-रात की थकान को अनुभव ही नहीं होने दिया। अभियान समन्वयक एक वरिष्ठ कार्यकर्त्ता, जिनका परम पूज्य गुरुदेव के साथ अत्यंत निकट का सम्बन्ध रहा, ने इन पंक्तियों के लेखक सहित उपस्थित कार्यकर्त्ताओं के समक्ष परम पूज्य गुरुदेव की कही एक बात दोहराई थी। परम पूज्य गुरुदेव ने उनसे कहा था, **"बेटा! ये जो प्रचार-प्रसार का कार्य तुम कर रहे हो, वह तो आने वाले दिनों की तैयारी मात्र है। असली परीक्षा तो तुम्हारी तब होगी जब सारी दुनिया त्राहि-त्राहि कर रही होगी। सबकी निगाहें गायत्री परिवार की ओर होंगी। उनके मार्गदर्शन और समस्याओं के समाधान के लिए तुम्हें तैयार रहना है।"**

लगभग 30 वर्ष पहले परम पूज्य गुरुदेव द्वारा कही गई बातें आज चरितार्थ होती दिखाई देती हैं। उन्होंने सतयुग-प्रज्ञायुग की स्थापना की बात तो अवश्य कही है, लेकिन रंगाई से पहले धुलाई, नए भवन के निर्माण से पहले खंडहरों के ढाये जाने जैसे दृष्टांत भी दिए हैं। यह सुनिश्चित है कि उनका सतयुगी संकल्प लोगों की वर्तमान मनःस्थिति और परिस्थितियों को बदले बिना संभव नहीं हो सकता। अच्छा हो कि विश्वमानव विवेकपूर्वक सभी के लिए कल्याणकारी मार्ग अपना ले, अन्यथा मनःस्थिति और परिस्थितियों को बदलने के लिए न जाने प्रकृति के कितने थपेड़े समाज को सहने होंगे। आज भी समाज को समझदारी अपनाने के लिए सहमत करने हेतु सज्जनों की सेवा-सक्रियता की आवश्यकता है और तब भी होती है जब प्रकृति के थपेड़ों से मानवता कराह रही होती है। यह युग निर्माणियों की अग्नि परीक्षा का समय होता है।

26 मई 2021-एक प्रमाण

अखिल विश्व गायत्री परिवार ने 26 मई 2021 को गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना अभियान के अन्तर्गत एक ही समय प्रातः यज्ञ और सायंकाल दीपयज्ञ करने का आह्वान किया था। आरम्भ में लक्ष्य 24 लाख घरों में यज्ञ-दीपयज्ञ कराये जाने का था, लेकिन प्राप्त सूचनाओं के आधार पर इससे कहीं ज्यादा लोगों ने लोकमंगल के इस सामूहिक प्रयास में भागीदारी की। निःसंदेह ऐसे विराट अभियानों की सफलता संगठित होकर किए गए योजनाबद्ध प्रयासों पर निर्भर होती है। शान्तिकुञ्ज के इलैक्ट्रोनिक मीडिया विभाग, जोनल संगठन और युवा प्रकोष्ठ के ऐसे ही प्रयासों से अभूतपूर्व सफलता मिली, लेकिन इस सफलता में परिस्थितियों के योगदान को भी नज़रंदाज नहीं किया जा सकता।

देखा जाय तो परिस्थितियाँ पहले से कहीं ज्यादा प्रतिकूल थीं। न तो घर-घर संपर्क हुआ, न यज्ञ करने वालों को उस प्रकार का प्रशिक्षण दिया गया जैसा कि विगत वर्षों में दिया जाता रहा है और न ही लोगों तक साधन-सुविधाएँ पहुँचाना

20 जून 2021
गायत्री जयन्ती

आसान रहा। यह सही है कि ऑनलाइन सीधे प्रसारण ने यज्ञ कराने के लिए प्रत्यक्ष पहुँचने वाले यज्ञ पुरोहितों की कमी पूरी कर दी, लेकिन परिजन स्वयं अनुभव करें कि सामान्य परिस्थितियों में नए लोगों को यज्ञ कराने के लिए सहमत करना कितना कठिन होता है। ऐसे में उनका ऑनलाइन संपर्क से ही स्वतः सहमत होना और भाग लेना, इसमें आज कोरोना काल की विशेष परिस्थितियों का भी बहुत बड़ा योगदान है।

कोरोना संक्रमण काल का प्रभाव

समाज जाति-धर्म, भाषा-प्रान्त, ऊँच-नीच; न जाने कितने वर्गों में बँटा हुआ है। लेकिन रास्ते चलते घनघोर आँधी या बरसात आ जाये तो सभी एक छत के नीचे बिना किसी भेदभाव के इकट्ठे हो जाते हैं। संभवतः ऐसा ही कुछ-कुछ प्रभाव आज की प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने यज्ञ अभियान पर भी निश्चित ही रहा होगा।

इस वर्ष हमारे सामूहिक यज्ञ अभियान के उद्देश्य के साथ कोरोना के संक्रमण की रोकथाम, बचाव के लिए प्रार्थना और विशिष्ट आध्यात्मिक प्रयोग भी जुड़ा। आज सारी दुनिया में इस महामारी के कारण हा-हाकार मचा है। हर कोई इससे बचना और बचाना चाहता है। ऐसे में गायत्री यज्ञ के सरल विधान के साथ लोगों का जुड़ना स्वाभाविक ही था। देखा गया कि हिन्दू धर्मानुयायी अनेक सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनों ने तो इस यज्ञ अभियान में बढ़चढ़ कर भाग लिया ही, आँध्र प्रदेश के रायचूर जिले में अनेक मुस्लिम परिवारों में, असम के सैकड़ों नामघरों में, छत्तीसगढ़ में शदाणी दरबार, बंजारी धाम एवं कई मठों में यज्ञ हुए।

इस सहभागिता और सहयोग को धर्म-वर्ग भेद की दृष्टि से न देखकर मानवीय आवश्यकता की दृष्टि से देखा जाना चाहिए। जैसा कि परम पूज्य गुरुदेव ने पहले ही संकेत किया था, 'त्राहिमाम्' करती मानवता को आज सही राह दिखाने वालों की आवश्यकता है। यह आवश्यकता निरन्तर बढ़ रही है।

कोरोना महामारी की दूसरी लहर में लोगों में ऑक्सीजन, वेंटिलेटर, बैड आदि की कमी की चर्चाएँ बहुत हुईं, लेकिन इन दिनों कुछ और भी कमियाँ अनुभव की गईं।

1. समझदारी : विशेषज्ञों द्वारा बार-बार, दिन-रात कोरोना से बचाव की अनिवार्य शर्तें बताई जाती रहीं, लेकिन इन नियमों की खूब अवहेलना होती रही और हो रही है जिससे महामारी ने विकराल रूप लिया और लॉकडाउन के कारण बेरोज़गारी और आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा।

2. जीवनी शक्ति : जिनकी जीवनी शक्ति सुदृढ़ थी, वे कोरोना संक्रमण से बचे भी और उससे लड़कर ठीक भी हो गए। पिछले एक वर्ष में लोगों ने अपनी जीवनी शक्ति बढ़ाने की ओर विशेष ध्यान दिया और तरह-तरह के उपाय अपनाए।

3. मनोबल : व्यक्ति के आत्मबल और मनोबल का सीधा सम्बन्ध उसकी जीवनी शक्ति से है। जीवनी शक्ति के लिए केवल आहार और औषधियाँ ही

21 जून 2021
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

नहीं, आत्मबल भी चाहिए। कठिन परिस्थितियों का सामना मनोबल के सहारे ही बेहतर तरीके से किया जा सकता है।

4. संवेदना : कठिन परिस्थितियों से उबरने में संवेदनाओं की बड़ी भूमिका होती है। यह संकट ऐसा था जिसमें अपने ही अपनों से दूर भागते दिखाई दिये। कठिनाइयाँ समाप्त नहीं हुई हैं। आने वाली कठिनाइयों से लड़ने के लिए मानवीय संवेदनाओं को जगाने और बढ़ाने की आवश्यकता है।

यह कुछ ऐसी आवश्यकताएँ हैं जिनकी हर व्यक्ति और समाज को नितांत आवश्यकता है। प्रतिकूलताओं के समय निःसंदेह इनकी कमी अधिक अनुभव होती है। मानवता पर आए हर संकट के समय अखिल विश्व गायत्री परिवार की सेवा-संवेदना ने लोगों को संबल प्रदान किया है। कोरोना संक्रमण काल ने इस दिशा में हमें और जागरूक किया है। जैसे कोरोना से प्रभावित समाज हमारे यज्ञ अभियान के साथ जुड़ा, वैसे ही वर्तमान परिस्थितियों में इन अभावों को दूर करने के लिए भी हमें समाज से बेहतर सहयोग मिलेगा, यह सुनिश्चित है। हमें बस अपनत्व का विस्तार करते हुए सुनियोजित कार्यक्रमों के साथ सद्भावनापूर्वक जन-जन तक पहुँचना होगा।

आगामी पर्व और योजनाएँ

परम पूज्य गुरुदेव 20 जून 1971 को शान्तिकुञ्ज आए थे। यह शान्तिकुञ्ज की स्थापना का स्वर्ण जयन्ती वर्ष है। स्वर्ण जयन्ती वर्ष का यह जून माह विशेष संभावनाएँ लेकर आया है। 20 जून को गायत्री जयन्ती है और अगले ही दिन 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस भी है। दोनों ही आत्मबल, मनोबल एवं शारीरिक स्वास्थ्य संवर्धन की प्रेरणा देने वाले पर्व है।

गायत्री जयन्ती

गया: प्राण उच्यन्ते, गया प्राणा उच्यन्ते
गयान् प्राणान् त्रायते सा गायत्री।

अर्थात्-जो प्राणों की रक्षा करती है, जिसके सद्अनुष्ठान से जीवन-जीवन बनता है, जो गाने वालों की, उसका निरन्तर अभ्यास करने वालों की त्रिविध ताप से रक्षा करती है, वह गायत्री है।

गायत्री प्राणों का आधार है। गायत्री एवं यज्ञ अन्योन्याश्रित हैं-देव संस्कृति के माता-पिता कहे जाते हैं। समाज में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए, सद्भावनाओं को जगाने के लिए गायत्री और यज्ञ को जन-जन के जीवन में प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता है। गायत्री उपासना से व्यक्ति में समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी का विकास होता है।

यज्ञ भगवान को जन-जन तक पहुँचाने का एक सफल प्रयोग हम 26 मई को कर चुके हैं। हमने इसे व्यापक बनाने के लिए तरह-तरह के प्रयोग किये। आज हम सूक्ष्म यज्ञ जैसे यज्ञ के अनेक स्वरूपों की खोज में जुटे हैं, ताकि वे सभी के लिए सहज सुलभ हों और सबके लिए स्वीकार्य हों, लेकिन परम पूज्य गुरुदेव ने तो पहले ही हमें यज्ञ का सूक्ष्मतम और सर्वस्वीकार्य स्वरूप बताया है, प्रचलन का अभियान चलाया है, वह है **'दीपयज्ञ'**। दीपक के माध्यम से

आषाढ़-श्रावण
हरीतिमा संवर्धन

सद्भावों की आहुति बिना किसी भेदभाव के लिए हर व्यक्ति दे सकता है। उसी प्रकार परम पूज्य गुरुदेव ने गायत्री का सरल और सर्वमान्य स्वरूप भी हमें बताया है-वह है **'सबके लिए सद्बुद्धि, सबके लिए उज्ज्वल भविष्य'** की प्रार्थना।

प्रस्तुत आलेख 26 मई के यज्ञ अभियान के ठीक बाद में लिखा जा रहा है। शान्तिकुञ्ज में गायत्री जयन्ती एवं योग दिवस के कार्यक्रमों का निर्धारण अभी किया जाना है। संभवतः वे भी ऑनलाइन ही सम्पन्न होंगे। हमारा कौशल यह है कि वर्तमान परिस्थितियों में जनमानस की भावनाओं को परखते हुए हम कितनी कुशलता से गायत्री को **'युगशक्ति'** के रूप में प्रतिष्ठित कर पाते हैं। महात्मा गाँधी इसी गायत्री को 'सबको सन्मति दे भगवान' कहकर जपते थे, तो अन्य धर्म, सम्प्रदाय, वर्गों में सद्बुद्धि की अपनी-अपनी प्रार्थनाएँ हैं। उनके सहारे हमें परम पूज्य गुरुदेव के विचारों और भावों को पहुँचाकर वर्तमान समय की अवांछनीयताओं को निरस्त कर समाज को सही दिशा देनी है।

योग दिवस

योग दिवस पर राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप आसन, प्राणायाम, ध्यान की क्रियाएँ सम्पन्न कराई जायेंगी। शान्तिकुञ्ज से भी इनका सीधा प्रसारण होगा और लाखों लोग इनका लाभ ले सकेंगे। लेकिन एक दिन के प्रदर्शन से न तो स्वास्थ्य लाभ संभव है, न ही जीवन का उत्थान। हमें इस जनउत्साह को बनाये रखकर छोटे-छोटे समूहों में नित्य अभ्यास कराने और केवल स्वास्थ्य लाभ के लिए ही नहीं बल्कि लोगों की जीवन शैली को बदलने का प्रयास करना चाहिए।

आज भौतिकवाद लोगों की मानसिकता पर बुरी तरह हावी है। लेकिन वर्तमान परिस्थितियाँ बताती हैं कि धन ही जीवन के लिए सबकुछ नहीं है। अपने व्यवसाय की तरह ही स्वास्थ्य के लिए, परिवार के लिए, समाज के लिए भी हमें समय निकालना चाहिए। श्रम का भी जीवन में उतना ही महत्त्व है जितना कि धन का।

गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं- **समत्वं योग उच्यते।**

यह समत्व भाव (सुख-दुःख, हानि-लाभ, यश-अपयश आदि से अविचलित-निर्लिप्तता) व्यक्ति में परिस्थितियों का सामाना करने का हौसला उत्पन्न करता है। इस मानसिकता वाले ही प्रकृति का दोहन नहीं, पोषण कर सकते हैं।

आषाढ़-श्रावण में वृक्षारोपण

इन दिनों ऑक्सीजन के अभाव की खूब चर्चा हुईं। लोगों को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित किया गया। वस्तुतः ऑक्सीजन तो वृक्षारोपण का एक बहुत छोटा-सा लाभ है। प्रकृति-पर्यावरण के संतुलन में वृक्षों की बहुत बड़ी भूमिका है। असमय बाढ़-सूखा, आँधी-तूफान, बढ़ते तापमान, पिघलते ग्लेशियर, दम घोंटू हवा आदि संकटों से बचना है तो वृक्षारोपण पर बहुत ध्यान देना होगा। आषाढ़-श्रावण माह इसके लिए सर्वोत्तम समय है।

समय और वातावरण अनुकूल है, समाज में सहयोगात्मक भाव बढ़ रहा है। आवश्यकता समझदारीपूर्वक सुदृढ़ चरण बढ़ाने और गायत्री के 'युगशक्ति' रूप को साकार करने की है।

अच्छा स्वास्थ्य और अच्छी समझ जीवन के दो सर्वोत्तम वरदान हैं।

राष्ट्रीय यज्ञ अभियान
बुद्ध पूर्णिमा-26 मई 2021

शान्तिकुञ्ज का संदेश : यज्ञ का तत्त्वदर्शन जनजीवन में उतरे

यज्ञ के बिना भारतीय संस्कृति की कल्पना अधूरी है।

अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा इस वर्ष 26 मई-बुद्ध पूर्णिमा के दिन घोषित यज्ञ अभियान बहुत सफल रहा। लक्ष्य 24 लाख घरों में यज्ञ कराने का रखा गया था। कोरोना गाइड लाइन्स की प्रतिकूलताओं के बीच कितने घरों में यज्ञ हुए यह सही-सही अनुमान लगाना कठिन है, लेकिन देशव्यापी संगठन और शाखाओं द्वारा की गई तैयारियों से यह अनुमान लगाया जा रहा है कि निश्चित ही हम लक्ष्य तक पहुँचे हैं। यह अनुमान कार्यकर्त्ताओं द्वारा किए गए जनसंपर्क अभियान के आधार पर और यूट्यूब, फेसबुक, ज़ूम एप आदि के साथ लोगों के जुड़ने की संख्या के आधार पर लगाया जा रहा है।

शान्तिकुञ्ज के यज्ञ संचालन मंच से उद्‌बोधन देते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

पुरुषार्थ और परिस्थितियों के संयोग से मिली ऐतिहासिक सफलता

आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार

समग्र अभियान की ऐतिहासिक सफलता के प्रमुख आधारों में से एक है विगत जनवरी से अप्रैल-माह तक पूरे देश में चला '**आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार**' अभियान। इस अभियान ने **देवस्थापना** के माध्यम से 14 लाख से अधिक नए घरों तक पहुँचाया है, उनमें युगशक्ति गायत्री के प्रति अस्था जगाई है। लगभग प्रत्येक घर से कार्यकर्त्ताओं का सीधा संपर्क हुए था। अनजान लोगों तक, **प्रभावशाली विभूतियों तक**, विभिन्न धर्म, वर्ग, पंथों तक मिशन पहुँचा। उन सबको राष्ट्रीय यज्ञ अभियान में शामिल होने के लिए सहमत करना कठिन नहीं रहा।

संगठन की सक्रियता

शान्तिकुञ्ज में 26 मई के बाद हुई समीक्षा बैठक में इस अभियान की सफलता का कारण जोनल संगठन तन्त्र द्वारा चलाए गए जनसंपर्क अभियान को बताया गया। इस अभियान के लिए फोन तथा सोशल मीडिया के माध्यम से जितना संपर्क किया गया, उतना शायद ही पहले कभी हुआ हो। प्रत्येक ज़ोन कार्यालय ने लगभग प्रत्येक जिले की ज़ूम मीटिंग की। प्रत्येक नगर-ग्राम के प्रमुख कार्यकर्त्ता के साथ शान्तिकुञ्ज का सीधा संवाद हुआ।

ऑनलाइन सीधा प्रसारण

ऑनलाइन यज्ञ संचालन होने से लोगों को बहुत सुविधा हुई। शान्तिकुञ्ज के सीधे संदेश और प्रभावशाली संचालन ने यज्ञ के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ाया और इसे अधिक प्रभावशाली बनाया।

श्रद्धेय द्वय की प्रेरणा-आशीष

श्रद्धेय डॉक्टर साहब और श्रद्धेया जीजी ने अपने पत्र द्वारा वर्तमान कोरोना काल की कठिन परिस्थितियों में श्रद्धालु-सज्जनों को संगठित करने का आह्वान किया था। लोगों ने इसे गुरुसत्ता का आदेश मानकर सक्रियता अपनाई और अच्छी सफलता पाई।

सुगम-सरल स्वरूप

केवल अग्निहोत्र ही नहीं, लोगों ने सूक्ष्म यज्ञ किए, दीपयज्ञ किए, पाँच दीपक जलाकर भाव आहुतियाँ समर्पित की। यज्ञ के ऐसे अनेक प्रकार अपनाए गए। इस सुगमता के कारण यह सभी धर्म, वर्ग, सम्प्रदायों के लिए सहज ग्राह्य हो गया था। सबने श्रद्धापूर्वक मानवमात्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए किए जा रहे इस प्रयोग में भाग लिया।

कोरोना काल का प्रभाव

वर्तमान समय में हर व्यक्ति कोरोना संकट से त्रस्त है, हर परिवार प्रभावित है। इस संकट से मुक्ति पाने की लोगों में उत्कट इच्छा है। वैसे तो यज्ञ का उद्‌देश्य बहुमुखी था। मानवमात्र के उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना, वातावरण परिशोधन की कामना, सद्‌भाव के जागरण, दैवीय अनुग्रह की प्राप्ति, पाप-ताप-दोषों का परिमार्जन जैसे अनेक प्रयोजन-प्रार्थनाओं के साथ यह यज्ञ अभियान सम्पन्न हुआ, लेकिन प्राप्त समाचारों के अनुसार हर क्षेत्र में कोरोना विषाणु के नाश एवं इस संकट के समाधान के लिए विशेष प्रार्थनाएँ की गईं, आहुतियाँ अर्पित की गईं। इस निमित्त विषाणु नाशक विशिष्ट औषधियों युक्त हवन सामग्री और मंत्रों के साथ आहुतियाँ दी गईं। अधिक से अधिक परिवारों में यज्ञ होने का यही प्रधान कारण भी देखा जा रहा है।

संदेश

हम अंधेरे में प्रकाश लाने वाले दीपक बनें

"26 मई 2021-बुद्ध पूर्णिमा के राष्ट्रीय यज्ञ अभियान का संचालन शान्तिकुञ्ज से हुआ। सोशल मीडिया के माध्यम से लाखों लोगों ने इसमें भाग लिया। अपने व्यक्तित्व और व्यवहार से करोड़ों लोगों को प्रभावित करने वाले आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने उन्हें सम्बोधित करते हुए कहा कि हम अंधेरे में प्रकाश लाने वाले दीपक बनें, रोतों के आँसू पोंछने वाले रुमाल बनें, जनजीवन में यज्ञभाव का संचार हो, यही हमारे अभियान का उद्‌देश्य है। उन्होंने कहा-

आत्मशक्ति का जागरण • यज्ञ पिता और गायत्री माता देव संस्कृति के आधार हैं। गायत्री आत्मा को पोषण देने वाली माँ है तो यज्ञ पुरुष सृष्टि का पालन-पोषण करने वाले, उसे व्यवस्थित करने वाले पिता हैं। यज्ञ से आत्मबल और देवत्व बढ़ता है। इसीलिए जब भी देवता यज्ञ करते थे, सुबाहु-ताड़का आदि राक्षस उनके विध्वंस का प्रयास करते थे। भारतीय संस्कृति की कल्पना यज्ञ के बिना संभव ही नहीं है।

वातावरण का शोधन • चाहे रावण वध हो या महाभारत, असुर तो अस्त्र-शस्त्र से मारे जाते हैं, लेकिन वातावरण में छाई असुरता-विषाक्तता को दूर करने के लिए सामूहिक यज्ञों का ही प्रचलन रहा है। आज भी यही प्रयोग दोहराया जा रहा है।

जीवन यज्ञमय हो • हमारे यज्ञ अभियान का उद्‌देश्य केवल अग्निकुण्ड में आहुतियाँ देना नहीं है, बल्कि यज्ञभाव को हृदयंगम कराना है। यज्ञीय जीवन जीने से अंतःकरण में परमात्मा का प्रकाश बढ़ता जाता है। परम पूज्य गुरुदेव के पास परमात्मा का यही प्रकाश था, जिसके कारण उनके मुख से जो शब्द निकला वह हर शब्द साकार होता चला गया।

प्रभाव • हमारे यज्ञ अभियान से लाखों लोगों के अंतःकरण से जो पवित्र विचार और भाव प्रस्फुटित होंगे, वे भाव सारे विश्व के कष्ट-कठिनाइयों को दूर करने में सहायक होंगे। यज्ञ से विषाणुओं का नाश होता है, वातावरण व अंतःकरण का शोधन होता है।

पूज्य गुरुदेव के मुर्गे बनें, कहें 'कुकड़ूऽऽकू' • परम पूज्य गुरुदेव ने सन् 1986 के एक प्रवचन में कहा था कि गायत्री अब युगशक्ति बनने जा रही है। युगशक्ति में पूरी दुनिया को बदलने की ताकत है। हमें परम पूज्य गुरुदेव का मुर्गा बनकर बाँग देनी है, हर घर, परिवार, देश, संस्कृति, समाज को गायत्रीमय बनाना है।

प्रज्ञा अभियान (पाक्षिक)
जनसंपर्क बढ़ाने और विचार क्रान्ति अभियान को गति देने का सशक्त माध्यम है

पाक्षिक प्रज्ञा अभियान द्वारा गायत्री को घर-घर पहुँचाने के लिए जनसंपर्क अभियान को बढ़ाने की प्रेरणा दी जा रही है। राष्ट्रीय यज्ञ अभियान की सफलता पर पड़े 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान के प्रभाव ने इस तथ्य को एक तरह से प्रमाणित भी कर दिया है।

प्रज्ञा अभियान के माध्यम से लोगों से संपर्क करना आसान है। विचार क्रान्ति अभियान के अन्तर्गत लोगों तक निःशुल्क प्रज्ञा अभियान लेकर पहुँचा जाय। इससे -

- हमारा जनसंपर्क बढ़ता रहेगा।
- उन तक मिशन की जानकारी पहुँचाना आसान हो जायेगा।
- हम वर्ष में 24 बार किसी के घर पहुँचेंगे, बातचीत करने का अवसर मिलेगा तो उन पर पूज्य गुरुदेव के विचारों का प्रभाव पड़ना सुनिश्चित है।
- अन्य पत्रिकाओं के सदस्य बढ़ेंगे।
- यह नैष्ठिक साधकों के अंशदान और समयदान के श्रेष्ठ-सार्थक उपयोग का माध्यम बन सकता है।

राष्ट्रीय यज्ञ अभियान की विशिष्ट उपलब्धियाँ

महाराष्ट्र : इस अभियान के प्रति लोगों के उत्साह को परिजन सतयुग के आगमन की झलक-झाँकी मान रहे हैं।

- विगत दिनों आदरणीय डॉ. चिन्मय जी एवं अन्य वरिष्ठ जनों ने जिन विशिष्ट महानुभावों के घर देवस्थापनाएँ की थीं, गायत्री परिवार मुम्बई के प्रयासों से उन सभी के घर सायंकाल दीप जलाए गए, दीपयज्ञ-प्रार्थनाएँ हुईं। गायत्री परिवार मुम्बई के समन्वय श्री मनु भाई पटेल के समन्वयक ने इसके लिए विशेष प्रयास किए।
- राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान (NEERI) के वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारी सायंकालीन प्रार्थना के साथ जुड़े।
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं अन्य सामाजिक संगठनों ने पूरे प्रान्त में यज्ञ अभियान में भाग लिया।
- पतंजलि परिवार ने इस अभियान में सक्रिय भागीदारी की।
- इचलकरंजी के 70 उद्योगपतियों के घर यज्ञ हुए।

ओडिशा : भगवान जगन्नाथ के भक्तों ने इस अभियान को हृदय से स्वीकारा। अधिकांश जगन्नाथ मंदिरों में यज्ञ, दीपयज्ञ हुए। भगवान के भक्तों ने अपने घरों में दीपयज्ञ हुए। लोगों का कहना है कि ओडिशा में माँ गायत्री के प्रति भक्तिभाव का ऐसा वातावरण पहले कभी नहीं देखा गया, जैसा इस बार दिखाई दिया।

मध्य प्रदेश : मध्य प्रदेश में गृहे-गृहे यज्ञ अभियान का जबरदस्त उत्साह देखा गया। पूरे प्रदेश में 3,00,000 से अधिक घरों में यज्ञ हुए।

राजभवन में यज्ञ करतीं राज्यपाल श्रीमती अनुसुईया उइके

छत्तीसगढ़ : प्रदेश की राज्यपाल माननीया श्रीमती अनुसुईया उइके ने राजभवन में यज्ञ किया। सांसद, विधायकों के घर भी यज्ञ हुए।

- पूरे प्रदेश में 3,00,000 से अधिक घरों में यज्ञादि कार्यक्रम हुए।
- वनांचल के सभी सरपंचों को फोन कर अभियान की जानकारी दी गई। सरपंचों ने अपने-अपने गाँवों में मुनादी पिटवाई। परिणाम स्वरूप प्रत्येक घर में दीप जलाए गये, प्रार्थनाएँ की गईं।
- शदाणी दरबार, बंजारी धाम एवं अन्य मठ, सामाजिक संस्थानों ने पूरे अभियान में सक्रिय भागीदारी की।
- नगर-गाँवों में यज्ञशालाएँ घुमाई गईं, जिनमें विषाणुओं के नाश व वातावरण शोधन के विशिष्ट औषधियुक्त सामग्री से आहुतियाँ दी गईं।

पूर्वोत्तर भारत : पूर्वोत्तर के राज्यों में इस अभियान में देव संस्कृति के विस्तार में बहुत मदद की। जिस क्षेत्र में यज्ञों की अधिक मान्यता नहीं है, वहाँ 4000 घरों में यज्ञ होना बड़ी सफलता कही जा सकती है। अधिकांश नामघरों में दीपयज्ञ हुए।

जम्मू-कश्मीर : श्रीनगर में गायत्री यज्ञ हुआ, अनेक घरों में दीपयज्ञ सम्पन्न हुए। श्रीनगर में गायत्री शक्तिपीठ निर्माण के लिए भूमिदान करने और शीघ्र शक्तिपीठ बनाने का संकल्प उभरा।

दक्षिण भारत : क्षेत्रीय संगठनों ने तमिल, तेलुगु, कन्नड़ आदि स्थानीय भाषाओं में ऑनलाइन यज्ञ संचालन की व्यवस्था बनाई। वहाँ के मूल निवासियों ने बड़ी संख्या में यज्ञ किया।

- तलमारी, जिला रायचूर के 40 मुस्लिम परिवारों ने बड़े भक्तिभाव के साथ यज्ञ किया।
- बैंगलुरु में संघ मुख्यालय 'केशव कृपा' में तथा 28 सांसद-विधायकों के घर यज्ञ हुआ।
- केन्द्रीय संसदीय कार्य मंत्री श्री प्रह्लाद जोशी ने अपने घर यज्ञ किया।

शेष समाचार पृष्ठ 6 पर देखें

कोरोना संकट

ज़रूरतमंदों की सेवा में सदैव तत्पर है गायत्री परिवार

24 गाँवों में चल रहे हैं सेवाकार्य

जमशेदपुर। झारखण्ड

युवा प्रकोष्ठ टाटानगर अपने आस-पास के 24 गांवों तक जरूरतमंदों की सेवा में सतत सक्रिय है। उनके द्वारा दिनांक 20 मई से ऑक्सीजन सेवा उपलब्ध कराई जा रही है। अपने कर्मठ युवा कार्यकर्ता श्री गुरूदेव महतो के सौजन्य से शाखा को 10 ऑक्सीजन सिलेण्डर जनसेवार्थ प्राप्त हुए हैं। मारुति ओमनी में इन्हें स्थापित कर मरीज़ों को आपातकालीन सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं। 5 ऑक्ज्सीजन सिलेण्डर जमशेदपुर में तथा 5 धालभूमगढ़ में ग्रामीण क्षेत्रों के लिए उपलब्ध किए गए हैं।

20 मई से नवयुगदल तथा महिला मंडल द्वारा सूखा ज़रूरतमंदों को सूखा राशन उपलब्ध कराने की सेवाएँ भी आरम्भ की गई। प्रत्येक

नवयुगदल द्वारा सामान वितरण की तैयारी

परिवार को चावल, आटा, नमक, तेल, सब्जी, दाल आदि समुचित मात्रा में दिए जा रहे हैं।

नवयुगदल युवाओं को रक्तदान के लिए प्रेरित कर उन्हें ब्लड बैंक भेज रहा है। ज़ूम एप के माध्यम से पूरे झारखंड में योग, व्यक्तित्व परिष्कार, स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक जानकारी ,विशेषज्ञ चिकित्सकों के माध्यम से स्वास्थ्य परिचर्चा, पर्यावरण, यग्योपैथी जैसे अनेक विषयों पर सैकड़ों लोगों का मार्गदर्शन भी कर रहा है।

300 परिवारों को तीन माह का राशन दिया

वडोदरा। गुजरात

कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर अत्यंत हृदय विदारक सिद्ध हो रही है। न जाने कितनी बहिनों ने अपने पति खो दिये और न जाने कितने वृद्ध माता-पिता अपनी संतान से हाथ धो बैठे, जिनके घर रोजी-रोटी कमाने वाला कोई नहीं है, ऐसे ज़रूरतमंद पीड़ितों की सेवा के लिए वडोदरा ने सराहनीय पहल की। गायत्री परिवार वडोदरा के नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं ने अपने क्षेत्रों के ऐसे परिवारों का सर्वे किया। लगभग 300 परिवार ऐसे पाए गए। उन्हें तीन माह तक के लिए राशन (गेहूं, चावल, दाल, तेल, चीनी, नमक, मिर्च-मसाले आदि 13 वस्तुएँ, जिनकी कीमत 2760 रुपये है) की 300 किट तैयार की गईं।

14 एवं 15 मई को इन्हें विशिष्ट गणमान्यों के हाथों वडोदरा

चयनित परिवारों को राशन के किट देते परिजन

के सभी क्षेत्रों में वितरित कराया गया। 14 मई को महापौर श्री केयूर रोकडिया एवं पार्षद श्री राजेश प्रजापति के हाथों राशन वितरित किया गया। अगले दिन वरिष्ठ जनप्रतिनिधि श्री अल्पेश लिंबाचिया, श्री घनश्याम सोलंकी एवं श्री घनश्याम पटेल के हाथों राशन वितरित किया गया। लाभार्थियों ने गायत्री परिवार के प्रति आभार ज्ञापन करते हुए प्रार्थना की कि ऐसे स्वयंसेवियों पर भगवान का आशीर्वाद सदा बना रहे, उनकी क्षमता निरन्तर विकसित होती रहे।

वडोदरा की स्थानीय शाखाओं का सुन्दर समन्वय एवं सहयोग रहा। सर्वश्री अनिल रावल, जिगर ठक्कर, रमेश बी. पटेल, कोकिलाबेन परीख, योगेश भाई वसावा आदि ने अभियान का नेतृत्व किया।

गाँव-गाँव में कर रहे हैं ज़रूरतमंदों की सहायता

शाहजहाँपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार शाहजहाँपुर अपने जनपद के हर गाँव को कोरोना मुक्त कराने के प्रयासों में अहर्निश योगदान दे रहा है। प्राप्त समाचारों के अनुसार अब तक जनपद की अनेक शाखाओं ने ज़रूरतमंदों को मेडिकल किट, सैनिटाइज़र, दवाइयाँ आदि प्रदान की गईं।

बण्डा में माता भगवती देवी गौशाला बरीबरा-लुहिचा(बंडा) और गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मस्थली बंडा ने अनेक अंचलों में कोरोना महामारी से बचाव के लिए मास्क के प्रति लोगों को जागरूक किया। शाखा परिजनों ने गाँव-गाँव जाकर ग़रीब ज़रूरतमंद लोगों को शाखा परिजनों द्वारा हाथ से सिले मास्क वितरित भी किये।

शाहजहाँपुर : कोरोना संक्रमण से बचाव व पीड़ितों की सहायता के लिए गाँव-गाँव पहुँच रहा है गायत्री परिवार

सिक्किम में चल रहे सेवाकार्य

जोरथांग। सिक्किम

सुदूर सिक्किम प्रान्त से भी गायत्री परिवार द्वारा कोरोना संक्रमितों की सेवा के भरपूर प्रयास किए गए। मिशन की दृष्टि से विकासमान इस क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं ने जरूरतमंदों तक दवाई और भोजन उपलब्ध कराने प्रशंसनीय कार्य किया। स्थानीय शाखा कार्यवाहक ने संकट की इस वेला में सबसे होकर आगे आने और पीड़ित मानवता का मिलकर सहयोग करने की अपील भी की, हैल्पलाइन नम्बर जारी किया।

बहुमुखी सेवाएँ

जतारा, टीकमगढ़। मध्य प्रदेश

कोरोना संक्रमण को रोकने तथा संक्रमितों की सहायतार्थ जतारा शाखा ने कई तरह की सेवाएँ चला रखी हैं।

चिकित्सा : युवा इकाई द्वारा एक हैल्पडेस्क आरम्भ कर निःशुल्क चिकित्सकीय परामर्श दिया जा रहा है। इसके अन्तर्गत होम्योपैथिक, प्राकृतिक एवं यौगिक चिकित्सा परामर्श दिए जा रहे हैं।

परामर्श-प्रोत्साहन : कोविड संक्रमित मरीजों तक मनोबल बढ़ाने वाला परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य एवं अन्य पठनीय सामग्री सोशल मीडिया पर एवं व्यक्तिगत रूप से पहुँचाये जा रहे हैं।

वैक्सीनेशन जागरूकता : वैक्सीनेशन के लिए लोगों को जागरूक किया जा रहा है।

पर्यावरण : वातावरण परिशोधन के उपायों को अपनाने की जानकारी एवं प्रेरणा प्रदान की जा रही है।

झाँसी। उत्तर प्रदेश

भोजन : गायत्री प्रज्ञापीठ झाँसी द्वारा मेडिकल कॉलेज, विभिन्न नर्सिंग होम, आइसोलेशन सेण्टर्स में मरीजों एवं परिचारकों को भोजन पैकेट्स उपलब्ध करा रहा है। उनके द्वारा प्रतिदिन 250-270 भोजन पैकेट्स वितरित किए जाते हैं। 6 मई से आरम्भ हुई ये सेवाएँ परिस्थितियाँ सामान्य होने तक चलती रहेंगी।

परिवहन : कोविड मरीज़ों के अस्पताल तक लाने-लेजाने के लिए में सहायता की जा रही है।

प्लाज़्मा दान : ज़रूरतमंदों को प्लाज़्मा उपलब्ध कराने और जो ठीक हो चुके हैं उनसे प्लाज़्मा दान कराने क एक तंत्र तैयार किया कया है।

पर्यावरण : प्लाज़्मा लेने या देने वाले सभी लोगों से बरगद या पीपल का एक पेड़ लगाने और उसे बड़ा करने का संकल्प कराया जा रहा है, ताकि पर्यावरण संरक्षण में उनका भी योगदान हो सके।

कारा में बंदियों के लाभार्थ मास्क वितरण

बूँदी। राजस्थान : गायत्री परिवार ट्रस्ट बूँदी के सौजन्य से जिला कारागार को मास्क प्रदान किए गए। 17 मई को श्री सुरेश कुमार विजयवर्गीय ने यह मास्क जेलर श्री लोकोज्जवल सिंह को प्रदान किए। ये मास्क बंदियों में वितरित करने के लिए दिए गए हैं।

पर्यावरण : श्मशान में बढ़ते दबाव के बीच वहाँ अस्थि कलशों को सुरक्षित रखने में कठिनाई हो रही थी। गायत्री परिवार बूँदी ने इसके लिए श्मशागृह को लॉकर वाली एक अलमारी भेंट की।

बूँदी : कारा में मास्क दिए, श्मशान को अलमारी दान

दवा, ऑक्सीमीटर, सेनिटाइज़र, मास्क

कुरथौल, पटना। बिहार

जनहित के कार्यों के लिए सदैव समर्पित गायत्री परिवार ट्रस्ट कुरथौल कोरोना संक्रमित लागों की सहायतार्थ पूरे उत्साह के साथ सक्रिय है। शाखा द्वारा ऐसे अनेक लोगों को निःशुल्क दवाइयाँ, आवश्यकता तक के लिए पल्स ऑक्सीमीटर आदि उपलब्ध करा रही है। ज़रूरतमंदों में सैनिटाइज़र और मास्क भी वितरित कर रही है। 14 मई तक इस शाखा ने अनेक मरीज़ों को यह सुविधाएँ प्रदान कीं। सेवायज्ञ में सर्वश्री दिनकर सिंह, अरुण कुमार सिन्हा, डॉ. कौशल किशोर सहाय आदि सक्रिय रहे।

विशिष्ट औषधीय यज्ञ-धूम्र से सेनिटाइज़ेशन की चल पड़ी परम्परा

गायत्री परिवार एवं सेवा भारती का संयुक्त अभियान

नीमच। मध्य प्रदेश

14 दिन चला अभियान

नगर के हर गली-मोहल्ले को सेनिटाइज़ किया

वैश्विक महामारी कोरोना के शमन, जनमानस के उत्तम स्वास्थ्य लाभ की कामना एवं वातावरण के शोधन के पावन उद्देश्य से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, सेवा भारती एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार नीमच द्वारा 15 मई से औषधीय यज्ञ सामग्री से चलित यज्ञ योजना प्रारंभ की गई। उस दिन झूलेलाल बस्ती में, अगले दिन केशव बस्ती, मधुकर बस्ती क्षेत्र के बालाजी धाम, संपूर्ण बघाना क्षेत्र, सादड़ी रोड, धनेरिया रोड आदि स्थानों पर, सोमवार को पुरानी नगर पालिका क्षेत्र आदि में यज्ञधूम्र से वातावरण को सेनिटाइज़ करने के प्रयास हुए।

यह क्रम 28 मई तक प्रतिदिन चलता रहा। कोरोना सम्बन्धी निर्देशों का पालन करते हुए कार्यकर्त्ता प्रतिदिन सायं दो घण्टे इस कार्य के लिए सेवाएँ प्रदान करते रहे। कोरोना महामारी से मुक्ति के लिए किए जा रहे औषधीय जड़ी बूटियों से युक्तचलित यज्ञ को नगर वासियों द्वारा सराहा गया।

नीमच की गलियों को यज्ञ-धूम्र से सेनिटाइज़ करते नवयुवक

रायपुर में बहुत लोकप्रिय है यज्ञ अभियान

रायपुर। छत्तीसगढ़

गायत्री प्रज्ञा पीठ कोटा एवं टाटीबंध द्वारा वातावरण में व्याप्त विषाणुओं के नाश और कोरोना महामारी से मुक्ति की प्रार्थना के साथ गली-गली अग्निहोत्र अभियान चलाया। गायत्री नगर, भवानी नगर, टीचर्स कॉलोनी, अणुव्रत विहार, प्रीतम नगर में अग्निहोत्र किया गया। 100-100 मीटर की दूरी पर गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय मंत्र के साथ आहुतियाँ दी गईं। इसके साथ ही जोश और उत्साह से भरे नारों (हम सबने ठाना है, कोरोना को भागना हैं...आदि) के माध्यम से लोगों का मनोबल बढ़ाया।

रायपुर महानगर में सभी के सहयोग से कार्यक्रम उत्साहजनक रहा। सर्वश्री ज्ञानदेव येरपुड़े, श्री राजेश शर्मा, रंजेश झा, ताराचंद गिरेपुंज, तुला राम पटेल प्रमुख रूप से सक्रिय रहे। जोन प्रभारी श्री दिलीप पाणिग्रही के अनुसार दावड़ा कॉलोनी, तिल्दा, नवापारा, आरंभ में भी ऐसे ही प्रयोग हुए।

रायपुर नगर में सेनिटाइज़ेशन

भोथली, आरंग में

रविवासरीय सामूहिक अखण्ड जप

छिन्दवाड़ा। मध्य प्रदेश

जिले के 1800 साधक भाग ले रहे हैं

छिन्दवाड़ा जिले में 26 मई को 40,000 घरों में यज्ञ कराने का संकल्प लिया गया। इससे पूर्व 16 मई-अक्षय तृतीया से पूरे जिले में प्रत्येक रविवार को अखण्ड जप का भी शुभारम्भ हुआ। जिला समन्वयक श्री अरुण पराड़कर के अनुसार यह प्रयोग वातावरण में व्याप्त विषाणुओं के नाश तथा कोरोना महामारी के निवारण की प्रार्थना के साथ किया जा रहा है। प्रथम रविवार को 1000 साधकों ने और 23 मई को 1800 साधकों ने भाग लिया। इस उत्साह को इस जप अभियान को निरन्तर रखने का निश्चय हुआ है।

योग का अर्थ है अपने को लिप्सा और लालसा के भव-बन्धनों से मुक्त करके आदर्शवादिता के प्रति आत्म-समर्पण।

कोरोना संकट

पीड़ितों की सेवा, प्रशासन का सहयोग

ऑक्सीजन सिलेण्डर, एम्बुलेंस सेवा, दवाइयाँ, उपकरण दिए

वृद्धों के आवागमन के लिए एम्बुलेंस सेवा ऑक्सीजन कॉन्सेन्ट्रेटर भी दान किए

शान्तिकुञ्ज में निर्माणाधीन क्रिटिकल केयर यूनिट के लिए भी दिये हैं पाँच ऑक्जीजन कॉन्सेंट्रेटर

सानपाड़ा, नवी मुम्बई। महाराष्ट्र

कोरोना संक्रमण काल की प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने सामाजिक दायित्वों के निर्वाह का आदर्श प्रस्तुत करते हुए गायत्री चेतना केन्द्र सानपाड़ा ने निःशुल्क एम्बुलेंस सेवाएँ प्रदान कीं। 17 मई को प्राप्त समाचारों के अनुसार यह सेवा प्रत्येक ज़रूरतमंद के लिए उपलब्ध थी। इतना ही नहीं, केन्द्र ने पीड़ितों के लिए तीन ऑक्सीजन कॉन्सेण्ट्रेटर्स की व्यवस्था भी की। इनमें से एक 'मारू घर' वृद्धाश्रम को बुज़ुर्गों की सेवा के लिए दान कर दिया गया। शेष दो कोरोना पीड़ितों की जीवन रक्षा के लिए सार्वजनिक रूप से निःशुल्क उपलब्ध कराए जाते रहे।

ऑक्सीजन कॉन्सेंट्रेटर दान करते मनुभाई

गायत्री शक्तिपीठ में 100 बेड वाला कोविड केअर सेण्टर बनाने का प्रस्ताव भी नगर पालिका को दिया

सुल्तानपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार की सुल्तानपुर टीम कोरोना संक्रमण काल में नर-नारायण सेवा का धर्म बड़ी कुशलता से निभा रही है। डॉ. सुधाकर सिंह की अगुवाई में प्रतिदिन 100 से अधिक ज़रूरतमंद लोगों तक भोजन पहुँचाया जा रहा है। इसके अलावा मरीज़ों के लिए आवश्यक मेडिकल उपकरण भी निःशुल्क उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इस क्रम में एक हॉस्पिटल में 12 भाप मशीन, 40 नेबुलाइजर मास्क, 2 नेबुलाइजर मशीन, 10 पैकेट नेबुलाइजर की दवा, लांग एक्टिव इन्सुलिन की 4 वॉयल निशुल्क प्रदान की गईं। सेवायज्ञ में सर्वश्री सरजू प्रसाद वानप्रस्थी, प्रभाकर सक्सेना, अभिषेक सिंह, राजमणि मिश्रा, डॉ. गौरी आदि प्रमुख सहयोगी थे।

जैसलमेर। राजस्थान

पीड़ित मानवता की सेवा की अपनी उदात्त परम्परा का निर्वाह करते हुए युवा संगठन 'दिया' ने जवाहिर चिकित्सालय को एक लाख रुपय मूल्य के जीवन रक्षक उपकरण भेंट किये। चिकित्सा अधिकारी डॉ. जेआर पंवार को यह उपकरण सौंपते हुए श्री नरेन्द्र सिंह भाटी ने पीड़ा निवारण में सदैव अग्रणी रहने का गायत्री परिवार का संकल्प दोहराया। यह उपकरण कोरोना संक्रमित मरीज़ों के लाभार्थ भेंट किए गए हैं। इस अवसर पर गायत्री परिवार के गणमान्य सर्वश्री चैनाराम चौधरी, महेश गंगण, संवताराम और चिकित्सालय प्रशासन के अधिकारी डॉ. पूनमचंद कुमावत, मनोहर दैया, पार्षद श्री हरीश धनदे आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

जैसलमेर में पीएमओ को चिकित्सा उपकरण भेंट करते गायत्री परिजन

डोमचांच, कोडरमा। झारखण्ड

स्थानीय गायत्री परिवार और पत्थर उद्योग संघ ने मिलकर प्रशासन को 40 ऑक्सीमीटर भेंट किये। गायत्री परिवार के श्री शिव कुमार वर्णवाल और संघ के पदाधिकारियों ने यह ऑक्सीमीटर कलेक्टर श्री रमेश घोलप को भेंट किये। इससे पूर्व भी दोनों संगठनों द्वारा कोरोना संक्रमितों के इलाज के लिए प्रशासन को 95 ऑक्सीजन सिलेण्डर दिये गए हैं।

6 एम्बुलेंस उपलब्ध कराईं, सैकड़ों लोग लाभान्वित

जयपुर। राजस्थान : कोरोना संक्रमण की विकट स्थिति में गायत्री परिवार जयपुर ने पीड़ितों की सेवार्थ छः एम्बुलेंस मानवता की सेवा में समर्पित कर दी थीं। ऑक्सीजन सिलेंडर युक्त एम्बुलेंस सेवाएँ 13 मई से ही आरम्भ हो गई थीं। हैल्पलाइन नम्बर 07073155927 पर संपर्क कर सैकड़ों ज़रूरतमंदों ने उनका लाभ लिया।

श्मशान के लिए दान दी वेशकीमती जमीन, अब साफ-सफाई का उत्तरदायित्व भी सँभाला

गढ़पुरा, बेगूसराय। बिहार

कोरोना काल में हो रही मौतों के लिए श्मशान की आवश्यकता थी। गढ़पुरा के गायत्री परिजन मारवाड़ी परिवार ने इसके लिए अपनी लाखों रुपये की वेशकीमती जमीन सार्वजनिक रूप से समर्पित कर दी। वहाँ प्रतिदिन गढ़पुरा सहित आसपास के गाँव के कोरोना संक्रमित मृतकों का अंतिम संस्कार किया जा रहा है।

यह वह समय है जब मरने वाले के परिजन भी शव के समीप झाँकने तक नहीं जाते हैं। ऐसे में भूमिदान दाता मारवाड़ी परिवार ने इस श्मशान की साफ-सफाई का दायित्व भी सँभाल लिया है। श्री सुशील कुमार सिंघानिया एवं उनके कुछ साहसी सहयोगी प्रत्येक बुधवार को इस श्मशान की सफाई करते हैं। वे मृतकों के कपड़े, अधजली लकड़ियाँ एवं अन्य गन्दगी हटाकर परिसर को साफ-सुथरा कर देते हैं। महामारी के इस दौर में सामाजिक संवदेनाओं का शानदार आदर्श प्रस्तुत कर रहे इन साहसी युगसृजेताओं की सेवाओं को सभी सराह रहे हैं।

श्री सुशील कुमार सिंघानिया ने कहा कि कोरोना संक्रमण के इस कठिन समय में भी मानवीय संवेदनाओं को सुप्त नहीं रहने दिया जा सकता। हम संक्रमण से बचाव के लिए आवश्यक सभी सावधानियों को रखते हुए इस सफाई अभियान में जुटे हैं, ताकि गंदगी के कारण अन्य लोग संक्रमित होने से बचें।

मुक्तिधाम को सवा सौ क्विंटल लकड़ियाँ दीं

सागर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार सागर द्वारा कोरोना आपदा प्रबंधन के माध्यम से नरयाबली नाका मुक्तिधाम में एक सौ पच्चीस क्विंटल लकड़ी का दान किया। यह लकड़ियाँ नगर निगम प्रशासन को प्रदान की गईं, ताकि शवों का अंतिम संस्कार अच्छी तरह से हो सके ।

डॉ. अनिल तिवारी ने बताया कि सागर शाखा नैष्ठिक परिजन विगत एक वर्ष से कोरोना पीड़ितों की सेवा-सहायता कर रही है। लोगों को भोजन, दावाइयाँ एवं अन्य सहायता उपलब्ध करा रहे हैं। वर्तमान समय मे असमय मृत्यु को प्राप्त हुई दिवंगत आत्माओं की शांति हेतु जिले में 108 परिजन अपने घरों में एवं गायत्री शक्ति पीठों में प्रतिदिन यज्ञ-प्रार्थना कर रहे हैं।

कोविड संक्रमित परिवारों की अपने परिवार के सदस्य की तरह कर रहे हैं सेवा

श्री हितेश देसाई दैनिक उपयोग की वस्तुएँ और युग साहित्य भेंट करते हुए

नवसारी। गुजरात

पूरे गुजरात में अनेक शाखाएँ कोरोना पीड़ित मानवता की सेवा में जुटी हैं। गायत्री शक्तिपीठ नवसारी के कार्यवाहक श्री हितेश देसाई भी उन सहृदय महानुभावों में से एक हैं जो केवल कोरोना पीड़ित परिवारों की सामान से सहायता ही नहीं कर रहे, अपितु उनकी कष्ट-कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक परिवार के सदस्य की तरह खड़े दिखाई देते हैं। अपने समय, ज्ञान, प्रभाव को पूरा-पूरा लाभ मरीज़ों के परिवारों को दिलाने के लिए तत्पर रहते हैं।

गायत्री शक्तिपीठ नवसारी में हाल ही में स्थानीय सिविल हॉस्पिटल (जिला राजकीय चिकित्सालय) को कोरोना मरीजों के लाभार्थ जीवनोपयोगी वस्तुओं की किट भेंट की। इसमें उन्हें सेनिटाइज़र की बोतल, मास्क, साबुन, कोलगेट, ब्रश आदि प्रदान किए गए। उल्लेखनीय है कि सरकारी अस्पताल में जिले के दूर-दराज के क्षेत्रों से आने वाले लोगों के लिए यह बहुत आवश्यक एवं उपयोगी सेवा है।

श्री हितेश देसाई ने अस्पताल के अधिकारियों को पू. गुरुदेव की लिखी लगभग 1500 पुस्तकें भी दीं, जो मरीजों का मनोबल बढ़ायेंगी।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

कोरोना महामारी की इस तीव्र लहर ने सभी को प्रभावित किया है। विगत दिनों अखिल विश्व गायत्री परिवार की बहुत-सी देवात्माओं ने सहज रूप से अपनी जीवनयात्रा को विराम दिया तो कुछ कोरोना योद्धा के रूप में समाज सेवा करते हुए परम सत्ता के साथ एकाकार हो गए। परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान दें, उनके परिवारी जनों को इस वियोग को सहने की शक्ति प्रदान करें, शान्तिकुञ्ज सहित समस्त गायत्री परिवार ऐसी प्रार्थना करता है।

श्रीमती पुष्पा ताई, नागपुर। महाराष्ट्र

प्रत्येक कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर योगदान देने वाली श्रीमती पुष्पा ताई का दिनांक 16 मई 2021 को देहावसान हो गया। महाराष्ट्र में गर्भ संस्कार प्रशिक्षण शृंखला आरंभ करने तथा नागपुर के सभी पालिका विद्यालयों में भा.सं.ज्ञा. परीक्षा, वृक्षारोपण आदि आरंभ करने में उनका अग्रणी योगदान रहा।

श्री बी.पी. रायगुरुजी, अनगुल। ओडिशा

सुन्दरगढ़ एवं राउरकेला जिलों में सक्रिय रहे वयोवृद्ध कार्यकर्त्ता श्री बी.पी. रायगुरुजी 19 मई 89 वर्ष की आयु में पावन गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गये। वे सन् 1982 से मिशन की सेवा कर रहे थे। वे गायत्री परिवार ट्रस्ट राउरकेला के ट्रस्टी भी रहे।

श्री बृजमोहन सहगल एवं श्री भगवान ढबले, उज्जैन। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार खाचरोद के नींव के पत्थर माने जाने वाले श्री बृजमोहन सहगल परम सत्ता में विलीन हो गए। ऋषि नगर क्षेत्र के कार्यकर्त्ता श्री भगवान ढबले का भी 17 मई को देहावसान हो गया।

श्री अवध किशोर मण्डल, झुमरी तिलैया। झारखण्ड

गायत्री शक्तिपीठ तिलैया के ट्रस्टी, 79 वर्षीय श्री अवध किशोर मण्डल का कोरोना महामारी के कारण देहावसान हो गया।

श्री लाल मोहन सिंह यादव, बलिया। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ बलिया के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री लाल मोहन सिंह यादव का 20 मई को बनारस में स्वर्गवास हो गया।

श्री खेमदेव झाड़े, बैतूल। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ बैतूल के परिव्राजक श्री खेमदेव झाड़े का 7 मई 2021 को देहावसान हो गया। दहगुड, आठनेर, जिला बैतूल निवासी श्री झाड़े जी ने अपने 45 वर्ष के मिशन के कार्यकाल में बैतूल के अलावा तपोभूमि मथुरा, जन्मभूमि आँवलखेड़ा, झटीकरा-दिल्ली, सागर, रेहली में भी परिव्राजक के रूप में सेवाएँ प्रदान कीं।

श्रीमती उर्मिला वर्मा, भाटापारा। छत्तीसगढ़

शक्तिपीठ महिला मण्डल भाटापारा की संचालिका श्रीमती उर्मिला वर्मा का 26 अप्रैल को 62 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। वे अपने बाल्यकाल से ही मिशन के सेवाकार्यों में सक्रिय रहीं।

श्री शिवप्रसाद गुप्ता एवं श्री रामशंकर गुप्ता, ग्वालियर। म. प्रदेश

समर्पित कार्यकर्त्ता श्री शिवप्रसाद गुप्ता, आईएएस (सेवानिवृत्त) का 27 अप्रैल 2021 को 76 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। वे सन् 2006 से मिशन की सेवा में समर्पित थे।

सन् 1969 में परम पूज्य गुरुदेव से दीक्षित कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री रामशंकर गुप्ता (सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखाकार) का दिनांक 3 मई 2021 को 77 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे अच्छे वक्ता और कर्मकाण्ड में निपुण थे। बस्तर जिले में मिशन के प्रचार-विस्तार के लिए उन्होंने बहुत कार्य किया।

श्री महेन्द्र सिंह राठौर, झाबुआ। मध्य प्रदेश

नव चेतना विस्तार केन्द्र, ग्राम खवासा के प्रभारी श्री महेन्द्र सिंह राठौर का 26 मई 2021 को निधन हो गया। वे 72 वर्ष के थे और पिछले 32 वर्षों से मिशन की सेवा कर रहे थे।

श्री पी.एस. अवास्या एवं अन्य, अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

विगत लगभग 39 वर्षों से युग निर्माण आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी कर हरे श्री पी.एस. अवास्या का 14 मई 2021 को देहावसान हो गया। 72 वर्षीय अवास्या जी सेवा निवृत्त प्राचार्य थे। उन्होंने घर-घर यज्ञ-संस्कार और पत्रिकाओं के वितरण के माध्यम से विचार क्रान्ति में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

गायत्री शक्तिपीठ पेटलावद के समर्पित कार्यकर्त्ता **श्री हेमन्त शुक्ला जी** का दिनांक 26 अप्रैल 2021 देहावसान हो गया।

उदयगढ़ के समर्पित कार्यकर्त्ता **श्री आर.आर. खोडे** दिनांक 25 अप्रैल 2021 को परम चेतना में विलीन हो गए।

26 मई, बुद्ध पूर्णिमा के दिन सम्पन्न हुआ राष्ट्रीय गृहे-गृहे यज्ञ अभियान

छत्तीसगढ	3,00,000	उत्तर प्रदेश	3,20,000	महाराष्ट्र	2,55,000	राजस्थान	1,00,000	पश्चिमोत्तर राज्य	25,000
मध्य प्रदेश	2,95,000	गुजरात	3,35,000	बिहार	1,10,000	दिल्ली व आसपास	32,000	झारखण्ड	33,000

उपरोक्त आँकड़े शान्तिकुञ्ज में जोन समन्वयकों को प्रादेशिक संगठनों से मिली सूचनाओं के आधार पर दिए जा रहे हैं। प्रज्ञा अभियान को बड़ी संख्या में समाचार प्राप्त हुए हैं। यहाँ सबका समावेश तो संभव नहीं है, प्रायः समाचार भी एक जैसे ही हैं। देश के उत्साह की झलक-झाँकी कुछ समाचारों के माध्यम से यहाँ प्रस्तुत की जा रही है।

बुरहानपुर में चलते वाहन में यज्ञ, आहुति देते नगरवासी

जगदलपुर में यज्ञ करते श्रद्धालु

26 मई को यज्ञ करता कानपुर देहात का एक परिवार

चित्तौड़गढ़ में यज्ञ अभियान में भाग लेते परिजन

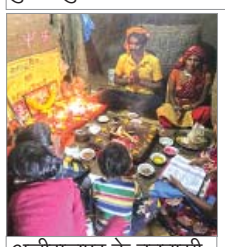
अलीराजपुर के वनवासी

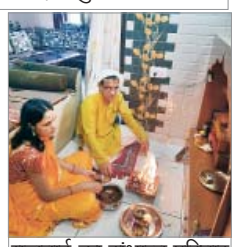
मुलताई का संभ्रान्त परिवार

कांकेर में चलित यज्ञ

गिरिडीह, झारखण्ड

अमेठी में यज्ञ

वडोदरा, गुजरात में यज्ञ

लुधियाना, पंजाब में यज्ञ करते श्रद्धालु

मध्य प्रदेश

भोपाल : जोन मुख्यालय भोपाल ने पूरे प्रदेश का कुशल नेतृत्व किया। श्री रमेश नागर के अनुसार भोपाल जिले ने सक्रियता का आदर्श स्थापित करते हुए पूरे जिले में 24000 घरों में यज्ञ का संकल्प लिया था। अकेले भोपाल शहर में ही लगभग 5000 घरों में यज्ञ हुए।

अलीराजपुर : यह जिला वनवासी क्षेत्र है। वहाँ के दो हजार चार सौ चौबीस परिवारों ने भाग लिया, यज्ञ किया। जिला समन्वयक श्री संतोष वर्मा के अनुसार इस कार्यक्रम में सभी समाज के लोग शामिल हुए।

नीमच : जिले की हर तहसील के गाँवों में यज्ञ अभियान सम्पन्न हुआ। हज़ारों परिवारों ने शान्तिकुञ्ज से हो रहे सीधे प्रसारण से जुड़कर पूरे भक्तिभाव के साथ यज्ञ किया। सायंकाल के नादयोग, जप, प्रार्थना एवं दीपयज्ञ के कार्यक्रम में भी गाँव-गाँव से लोग जुड़े।

जबलपुर : पूरे जिले में 11,000 से अधिक घरों में यज्ञ होने के समाचार मिले हैं। सायंकाल घरों में 5-5 दीप प्रज्वलित किए। सोशल मीडिया से दीपयज्ञ संचालन करते हुए अपनी गायत्री उपासना-साधना को नियमित करने के संकल्प दिलाए गये।

सागर : जिले में भी 11000 से अधिक घरों में गायत्री यज्ञ हुआ। सभी धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं ने भरपूर सहयोग किया। सबने मिलकर मानवमात्र के उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना की। डॉ. अनिल तिवारी के अनुसार सागर नगर के 1500 परिवार यज्ञ अभियान से जुड़े।

गुना : वैश्विक महामारी करोना से मुक्ति एवं पर्यावरण की शुद्धि के लिए गुना उपजोन के लगभग 9200 घरों में यज्ञ हुए। पर्यावरण शुद्धि वातावरण की विषाक्तता के शमन की प्रार्थना के साथ कोरोना के कारण दिवंगत आत्माओं की शान्ति की कामना भी की गई।

शाजापुर : जिले के 10,000 से भी अधिक घरों में यज्ञ हुआ। कोरोना से मुक्ति की सामूहिक प्रार्थना की गई व वृक्षारोपण का संकल्प दिलाया गया।

उज्जैन : सभी सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं के सहयोग से बड़ी संख्या में यज्ञ हुए। लायंस क्लब, स्वर्णिम भारत मंच, सेवा भारती, जन अभियान परिषद, रूपांतरण, महिलाओं के किटी समूहों, प्रशासनिक अधिकारियों, राजनेताओं का अविस्मरणीय सहयोग मिला। सभी ने यज्ञ अभियान में भागीदारी की। उज्जैन नगर में लगभग 20,000 व नागदा तहसील में 11000 घरों में यज्ञ हुए।

छत्तीसगढ़

रायपुर : राज्यपाल सुश्री अनुसुईया उइके सहित विधानसभा अध्यक्ष, सांसद, वरिष्ठ मंत्रियों, विधायकों एवं अनेक जनप्रतिनिधियों के निवास पर यज्ञ हुआ। बंजारी धाम मंदिर, शदाणी दरबार, दूधाधारी मठ सहित नगर के तमाम संगठनों, मंदिरों में यज्ञ हुए। रायपुर के 40,000 घरों में यज्ञ हुआ।

महासमुंद : महासमुन्द में तीन दिनों तक चलित यज्ञ से नगर को सेनिटाइज़ एवं कोरोना जागरूकता अभियान चलाया गया। इसका यज्ञ अभियान को बहुत लाभ मिला। पांचों विकासखंडो में गायत्री परिवार एवं अन्य संगठन सर्व समाज महासभा, पतंजलि योग समिति, विश्व हिंदू परिषद एवं बजरंग दल के सहयोग से पूरा अभियान बहुत लोकप्रिय हुआ।

धमतरी : धमतरी, कुरुद, मगरलोड, नगरी एवं भखारा विकास खण्डों के हजारों गायत्री परिजनों के साथ धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं ने भी कोरोना गाइड लाइन का पालन करते हुए यज्ञ किए। श्री दिलीप नाग के अनुसार जिले में लगभग 40 हजार परिवारों में यज्ञ हुआ।

बलौदाबाजार : जिले में लगभग 7600 घरों ने गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान में भागीदारी की। इन घरों में विश्वकल्याण, पर्यावरण संरक्षण, वातावरण के परिशोधन, कोरोना विषाणुओं के शमन तथा सकारात्मक उर्जा के प्रवाह की प्रार्थना के साथ आहुतियाँ समर्पित की गईं।

बालोद : बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर बालोद जिले में लगभग नौ हजार घरों में यज्ञ हुआ।

राजनांदगाँव : गायत्री शक्तिपीठ पवनतरा जालबांधा के हजारों घरों में गायत्री महायज्ञ हुआ। शक्तिपीठ के प्रमुख ट्रस्टी डॉ. शशिकान्त फटिंग के निर्देशानुसार यज्ञ सामग्री में स्वास्थ्य एवं वातावरण में विषाणु नाश के लिए उपयोगी गिलोय, तुलसी, चिरायता, पारिजात आदि औषधियों का हवन सामग्री में विशेष प्रयोग किया गया था।

झारखण्ड

झारखंड प्रदेश के सभी 24 जिलों में 33000 से ज्यादा घरों में यज्ञ किया गया। कई धर्म और संप्रदाय के लोगों ने यज्ञ अभियान में भाग लेते हुए मानवता को इस वैश्विक संकट से मुक्ति दिलाने की प्रार्थना की।

उत्तर प्रदेश

वराणसी: 'कोरोना से युद्ध और वातावरण करो शुद्ध' के संकल्प के साथ बुद्ध पूर्णिमा को 10,000 घरों में यज्ञ संपन्न हुआ। इस यज्ञ अभियान में हजारों-लाखों परिजनों ने स्वास्थ्य वर्धक, पर्यावरण शोधक एवं विषाणु नाशक विशिष्ट औषधियुक्त हवन सामग्री के साथ अग्निहोत्र किया।

सुल्तानपुर : सुल्तानपुर जनपद में 5000 से अधिक घरों में यज्ञ, दीपयज्ञ के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। वहाँ कोरोना से दिवंगत विशेष आत्माओं की शान्ति, सद्गति के लिए विशेष प्रार्थनाएँ की गईं।

आगरा : सामूहिक यज्ञ अभियान के अन्तर्गत आगरा के 5200 से अधिक घरों में परिजनों ने विशेष हवन सामग्री से अग्निहोत्र किया। जिले के परिजनों से कोरोना महामारी से दिवंगत परिजनों की आत्मिक शांति के लिए विशेष आहुतियाँ दी गईं, अखण्ड जप एवं दीपयज्ञ के कार्यक्रम भी हुए।

लखीमपुर खीरी : के 3500 घरों में गायत्री परिजनों ने यज्ञ अभियान में भाग लेते हुए कोरोना संक्रमण के निवारण व सर्वमंगल की कामना से गायत्री मंत्र और सूर्य गायत्री मंत्र की विशेष आहुतियाँ दीं।

बलरामपुर : जिले के 2500 घरों में यज्ञ हुआ। तुलसीपुर के 1500 घरों में गायत्री यज्ञ किया गया। गैंसड़ी ब्लॉक के लगभग 500 घरों में गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र और कोरोना नाशक मन्त्र से गायत्री महायज्ञ में अपनी आहुतियां समर्पित किया। पचपेड़वा में लगभग 550 घरों में श्रद्धा भरे हृदय से यज्ञ करते हुए मां गायत्री को याद किया गया।

मुजफ्फरनगर : जनपद मुजफ्फरनगर में 2400 से अधिक घरों में यज्ञीय आयोजन हुए। इनमें से शहर के 1200 परिवारों ने भाग लिया। डॉ. आशीष मिश्र के अनुसार पर्यावरण परिशोधन तथा वृक्षारोपण के प्रति जागरूकता बढ़ाने पर विशेष जोर दिया गया।

गुजरात

गुजरात की सैकड़ों शाखाओं द्वारा बड़ी संख्या में यज्ञ कराए जाने के समाचार हमें प्राप्त हुए हैं। जामनगर, अहमदाबाद, सूरत, राजकोट, पंचमहाल, वडोदरा आदि अनेक शाखाओं द्वारा भेजे गए समाचार प्रज्ञा अभियान के गुजराती संस्करण में विस्तार के साथ प्रकाशित किए जा रहे हैं।

राजस्थान

जयपुर : कोरोना से उत्पन्न भय, असुरक्षा एवं निराशा के वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा के संचार हेतु राजधानी के लगभग 5000 परिवारों में यज्ञ हुए। मानवता के उत्थान के लिए युगऋषि की प्रेरणाओं को हृदयंगम करते हुए सेवा-साधना करते रहने के संकल्प लिए गए।

चुरू : बुद्ध पूर्णिमा के दिन चुरू सहित गोगासर, सरदार शहर, सादुलपुर, तारानगर, साहवा आदि तहसीलों के 7000 घरों में गायत्री यज्ञ सम्पन्न हुए। कोरोना संक्रमण काल की विशेष परिस्थितियों में यज्ञ के प्रति लोगों की विशेष श्रद्धा देखी गई।

बाँसवाड़ा : जिले की घाटोल तहसील क्षेत्र में 500 घरों में यज्ञ सम्पन्न हुए। सभी धर्मशील भाई-बहिनों ने बड़े उत्साह एवं लगन का परिचय देकर सामाजिक, सांस्कृतिक उत्कर्ष के इस विराट अभियान में भागीदारी की।

भरतपुर : तहसील कुम्हेर की गायत्री शक्तिपीठ के कार्यकर्त्ताओं ने संकल्पपूर्वक योजनाबद्ध होकर राष्ट्रीय यज्ञ अभियान में भाग लिया। कुम्हेर तहसील के 44 गाँवों के 339 घरों में यज्ञ हुआ। बाबेन गाँव में श्री प्रेम सिंह प्रजापति और श्री खूबी राम के प्रयासों से सबसे अधिक 101 घरों में यज्ञ हुआ।

कोटा : राजगंज मंडी और उसके आस-पास के क्षेत्रों के 1151 घरों में मानवमात्र के उज्ज्वल भविष्य एवं कोरोना विनाश के लिए यज्ञ किया गया।

सीकर : जिले के 1000 घरों सहित मंदिर, हॉस्पिटल और गौशालाओं में यज्ञ हुए। गली-मोहल्लों में गायत्री मंत्र की गूँज एवं यज्ञ की सुगंध छा गई। इसके साथ ही लोगों ने वर्षा का जल सहेजने और वृक्षारोपण का भी संकल्प लिया।

पंजाब

लुधियाना :महानगर में 1500 परिवारों ने राष्ट्रीय यज्ञ अभियान में भाग लेते हुए कोरोना महामारी पर विजय पाने हेतु यज्ञ के माध्यम से देव शक्तियों से प्रार्थना की।

जम्मू-कश्मीर

लुधियाना: जम्मू-कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में नैष्ठिक परिजनों ने यज्ञ किया। इस अवसर पर वहाँ शक्तिपीठ निर्माण के संकल्प उभरे हैं।

लोग क्या कहते हैं, इस पर ध्यान मत दो। यह देखो कि जो करने योग्य था वह बन पड़ा या नहीं।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार ने दी कोरोना योद्धाओं और दिवंगत हुई देवात्माओं को श्रद्धाञ्जलि

कोरोना संक्रमण की वर्तमान लहर ने हज़ारों लोगों की जीवन लीला समाप्त कर दी। परम पूज्य गुरुदेव-परम वंदनीया माताजी के बसाये देव परिवार-गायत्री परिवार के कर्मठ कार्यकर्त्ता भी पीड़ित मानवता की सेवा करते हुए शहीद हुए। देव संस्कृति विश्वविद्यालय में 17 मई को उन सभी देवात्माओं को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने के लिए ऑनलाइन सभी आयोजित हुई। कुलपति श्री शरद पारधी, प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन सहित पूरे विवि. परिवार ने इसमें भाग लिया।

श्रद्धाञ्जलि सभा में माननीय कुलपति जी ने कहा कि अखिल विश्व गायत्री परिवार के कर्मठ कार्यकर्त्ता मानवता पर आए इस भीषण संकट के समय 'कोरोना योद्धा' के रूप में जी-जान से सेवाएँ दे रहे हैं। हम सब उन सभी परिवारों के साथ खड़े हैं, जो स्वजनों के वियोग के कठिन दौर से गुज़र रहे हैं।

सभा में सभी मृतात्माओं को शान्ति, सद्गति प्राप्त हो, उनकी जीवनयात्रा का अगला पड़ाव श्रेष्ठतर हो और परिवारी जनों को इस वियोग को सहने का बल मिले, ऐसी प्रार्थना की गई।

गायत्री विद्यापीठ के बच्चों ने जप किया
कोरोना महामारी के शमन के लिए की प्रार्थना

यह सेवा, सहायता, सद्भाव और संवेदनाओं के जागरण का समय है। गायत्री विद्यापीठ के बच्चों में यह संस्कार अंतरंग तक समाहित हैं। निर्मल भाववाले नन्हें बच्चों की प्रार्थना तो परमात्मा सुनते ही हैं, यह साधना उनके व्यक्तित्व में भी देवत्व का अभिवर्धन करेगी।

- श्रीमती शेफाली पण्ड्या,
गायत्री विद्यापीठ
प्रमुख, व्यवस्थापक मण्डल

इन दिनों मानवता पर आए घोर संकट से मुक्ति के लिए जगह-जगह प्रार्थनाएँ एवं धार्मिक अनुष्ठान हो रहे हैं। अखिल विश्व गायत्री परिवार ने भारत ही नहीं पूरे विश्व में सामूहिक जप, साधना, अनुष्ठानों का क्रम चला रखा है। शान्तिकुञ्ज में भी सामूहिक जप अनुष्ठान हुआ। अंतेवासी कार्यकर्त्ताओं और देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार ने भाग लिया। इस साधना में गायत्री विद्यापीठ के नन्हे बच्चे भी पीछे नहीं रहे। शान्तिकुञ्जवासी लगभग प्रत्येक विद्यार्थी ने अखण्ड जप में भाग लेते हुए माँ गायत्री एवं पावन गुरुसत्ता से शीघ्र समाधान की प्रार्थना की।

जिन्हें गुरुवर के विचारों से प्यार है, वे अवश्य पढ़ें

युगऋषि के संदेश

वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ, युगऋषि पूज्य गुरुदेव पं. श्री राम शर्मा आचार्य जी की क्रांतिकारी लेखनी ने नर से नारायण, मानव को महामानव बनाने वाली जीवन-साधना का विश्वकोश रचकर रख दिया। वे कहते रहे हैं कि यह साहित्य मैंने रोते हुए हृदय से निकले आँसुओं की स्याही से लिखा है,जो इसका स्वाध्याय करता है, उसके जीवन में कोई परिवर्तन न आया हो, ऐसा हो नहीं सकता। दुनिया को बदल देने का जो संकल्प हमने लिया है, वह सिद्धियों के बल पर नहीं, अपने क्रांतिकारी विचारों के बल पर लिया है।

मूल्य ₹90/- प्रति अंक
पृष्ठ संख्या 332

20 जून, 1971 को गुरुदेव हमेशा के लिए मथुरा छोड़कर हरिद्वार चले गए थे। उनकी मथुरा से विदाई और शान्तिकुञ्ज की स्थापना के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में गायत्री तपोभूमि द्वारा प्रयास किये जा रहे हैं कि पूज्य गुरुदेव के क्रान्तिकारी विचार हर व्यक्ति तक पहुँचें।

पूज्यवर ने साहित्य का विशाल सागर रचा है। सारा साहित्य पढ़ पाना हर व्यक्ति के लिए संभव नहीं हो पाता। अतः उनके विचारों का सार 'युगऋषि के संदेश' नामक ग्रंथ घर-घर स्थापित करने की योजना गायत्री तपोभूमि द्वारा बनाई गई है।

332 पृष्ठ के इस अद्भुत, अनुपम एवं संग्रहणीय ग्रंथ का मूल्य 130 रुपये है, लेकिन राज ईको ग्रुप, भीलगाँव (म०प्र०) के सहयोग से इसे आधे मूल्य 65 रुपये + 25 रुपये (डाक खरच / ट्रांसपोर्ट भाड़ा) जोड़कर कुल 90 रुपये में उपलब्ध कराया जा रहा है।

पुस्तक मँगाने एवं धनराशि भेजने के विवरण हेतु सम्पर्क कीजिए
गायत्री तपोभूमि, मथुरा - (वाट्सअप) 9412171035
Email ID : yugnirman@yugnirmanyojna.org

अखिल विश्व गायत्री परिवार का गौरव

डॉ. शगुन गोयल '2021 वूमेन ऑफ द ईयर' के नामित

डॉ. शगुन गोयल अखिल विश्व गायत्री परिवार की शिकागो शाखा के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री नरेन्द्र देसाई की बेटी है।

सैण्ट लुइस। संयुक्त राज्य अमेरिका

कैंसर विज्ञान के क्षेत्र में मिली अभूतपूर्व सफलता

अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री नरेन्द्र देसाई की बेटी डॉ. शगुन गोयल को ल्यूकेमिया एण्ड लिम्फोमा सोसायटी गेटवे चैप्टर द्वारा '2021 वूमेन ऑफ द ईयर' के लिए नामित किया गया है। मिसौरी प्रान्त के सैण्ट लुईस यूनिवर्सिटी, सैण्ट लुईस में कार्यरत डॉ. गोयल ने जो अभूतपूर्व सफलता अर्जित की, उसी को देखते हुए यह प्रतिष्ठित सम्मान उन्हें प्राप्त हुआ है।

डॉ. शगुन गोयल पिछले 8 से अधिक वर्षों से इस यूनिवर्सिटी में काम कर रही हैं। वे रक्त विकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और ल्यूकेमिया एण्ड लिम्फोमा सोसायटी के लिए धन जुटाने का अभियान चला रही हैं, ताकि आर्थिक रूप से अशक्त मरीज़ों की सहायता की जा सके और शोधकार्यों के लिए धन जुटाया जा सके। हर वर्ष औसतन 40 बोन मैरो ट्रांस्प्लांट इस यूनिवर्सिटी में किए जाते थे, लेकिन गतवर्ष 100 लोगों का बोन मैरो ट्रांस्प्लांट करने में उन्हें सफलता मिली। यह अभूतपूर्व है, एक रिकॉर्ड है। वे मरीज़ों, यूनिवर्सिटी स्टाफ और साथियों के बीच अत्यंत लोकप्रिय हैं।

"सच है, जो परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी के आदर्शों पर चलते हुए मानवता के उत्थान के लिए सक्रिय रहते हैं, उन्हें गुरुसत्ता का भरपूर प्यार और आशीर्वाद मिलता है। वे निरन्तर आगे बढ़ते जाते हैं। डॉ. शगुन अपने क्षेत्र में नित-निरन्तर सफलता प्राप्त करती रहें, ऐसी गुरुसत्ता से प्रार्थना, युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज के शुभाशीष।

- श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

डॉ. शगुन स्वयं मिशन की अत्यंत सक्रिय एवं प्राणवान कार्यकर्त्ता हैं। चाहे ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, यूके में एम.एससी. करने जाना हो अथवा कोई अन्य महत्त्वपूर्ण अवसर; उन्होंने शान्तिकुञ्ज आकर अथवा अन्य माध्यमों से गुरुदेव-माताजी का, श्रद्धेय डॉ. साहब एवं श्रद्धेया जीजी का आशीर्वाद अवश्य लिया है। इन मिशन के विश्वव्यापी विस्तार के क्रम में वे डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति देसंविवि के सम्पर्क में रहती हैं।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के पूर्व विद्यार्थी ने

सस्ता, सुगम बनाया ऑक्सीजन कॉन्सेण्ट्रेटर

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में एम.एस.सी. कम्प्यूटर साइंस के छात्र रहे सुगम कुमार ने गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता माननीय श्रीहरि के सहयोग से कम लागत का ऑक्सीजन कॉन्सेंट्रेटर तैयार किया। कोरोना संक्रमण की वर्तमान लहर में पीड़ित मानवता की यह बहुत बड़ी सेवा है।

सुगम कुमार द्वारा तैयार किया गया यह कॉन्सेंट्रेटर 5 से 8 लीटर क्षमता का है। यह कम दाम में सभी के लिए उपलब्ध है।

प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इस सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सुगम कुमार को अपनी शुभ कामनाएँ प्रेषित की।

न्यूज़ीलैण्ड में युगशक्ति का विस्तार

ऑकलैण्ड। न्यूज़ीलैण्ड

न्यूज़ीलैण्ड के प्रमुख शहरों में घर-घर गायत्री उपासना-यज्ञ, संस्कार आदि से विचार क्रान्ति का अभियान पूरे उत्साह के साथ गतिशील है। 25 अप्रैल को ग्लेनडोवी, ऑकलैण्ड में श्री पंकज व्यास का गृह प्रवेश गायत्री यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। उनके भारतीय और अंग्रेज मित्र बड़ी संख्या में यज्ञ में भाग लेने पहुँचे। हैमिल्टन निवासी सुश्री दीप्ति महापात्रा ने यज्ञ संचालन करते हुए यज्ञ का दर्शन समझाया। इस कार्यक्रम ने सभी के मनों को भारतीय संस्कृति के उदात्त आदर्शों और मानवमात्र के कल्याण की भावना से ओतप्रोत कर दिया।

अगले दिन 26 अप्रैल को अनिल ओझा के घर यज्ञ के साथ मंत्रलेखन अनुष्ठान की पूर्णाहुति हुई।

आओ जानें विश्वविद्यालय अपना
(देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड)

सप्तक्रांतियों में से एक स्वास्थ्य की दिशा में अखिल विश्व गायत्री परिवार सतत कार्य कर रहा है। जन जागरूकता, शोध, शिक्षण, प्रशिक्षण के अनेकानेक प्रयत्नों संग देव संस्कृति विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही वैकल्पिक चिकित्सा के प्रकल्प को विकसित कर वैज्ञानिक स्वरूप के वैकल्पिक चिकित्सा के प्रयोग संग जन सामान्य को लाभ देने एवं इस माध्यम से स्वास्थ्य के क्षेत्र में स्वावलंबन के अवसर उपलब्ध करा रहा है।

प्राकृतिक चिकित्सा | एक्यूप्रेशर चिकित्सा | एक्यूपंचर चिकित्सा | साउंड हीलिंग

पूरक एवं वैकल्पिक चिकित्सा केंद्र

योग चिकित्सा | फिजियोथेरेपी | षट्कर्म चिकित्सा | प्रज्ञा प्राणिक चिकित्सा

पूरक एवं वैकल्पिक चिकित्सा के प्रकल्पों के माध्यम से संचालित विविध गतिविधियाँ

शिक्षण (Teaching)	नियमित अकादमिक शिक्षण का प्रयोगिक क्रम सतत विद्यार्थियों हेतु
प्रशिक्षण (Training)	ऑनलाइन (Online) | ऑफलाइन (Offline) | ऑन-कैंपस (On Campus) | ऑफ कैंपस (Off Campus) शॉर्ट टर्म ट्रेनिंग प्रोग्राम (Short Term Training Programs) | कार्यशाला Workshop आयोजन का क्रम निरंतर संपादित किया जाता है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग लाभ से सकें साथ ही प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण का क्रम भी समय-समय पर आयोजित किया जाता है।
परामर्श (Consultation)	चिकित्सकीय परामर्श (Medical Consultation) के माध्यम से विविध रोग चिकित्सा के प्रयास
शिविर (Camps)	स्वास्थ्य शिविर (Health Camps) के माध्यम से रोग विशेष की चिकित्सा के विविध आयोजन
शोध (Research)	शोध (Research) के माध्यम से रोग विशेष की चिकित्सा में प्रभावी तकनीकों के प्रभाव का अध्ययन एवं वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों को वैज्ञानिक स्वरूप में प्रतिपादित करने हेतु प्रयासरत

पूरक एवं वैकल्पिक चिकित्सा केंद्र (संपर्क सूत्र) :
ईमेल : ccam@dsvv.ac.in मो.नं. : +91-9258360555
www.dsvv.ac.in
@dsvvofficial Dev Sanskriti Vishwavidyalaya

विशिष्ट प्रसंग 》 **श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी के विवाह का स्वर्ण जयन्ती समारोह पूरे विश्व में मनाया गया**

युगशक्ति गायत्री के वैश्विक विस्तार की यात्रा के 50 वर्ष

परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी युग परिवर्तन के महान कार्य को सम्पन्न करने के लिए अवतरित भागवत् चेतना थी। इस लक्ष्य की सिद्धि में करोड़ों लोग उनके अंग-अवयव के रूप में सक्रिय रहे। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी वे सौभाग्यशाली दिव्य आत्मा हैं, जिन्हें पावन गुरुसत्ता के महाप्रयाण के बाद इस दैवीय मिशन को गति देने का गुरुतर दायित्व सौंपा गया। 3 जून 2021 उनके विवाह की 50वीं वर्षगाँठ थी। उन्होंने अपने विवाह का स्वर्ण जयन्ती समारोह शान्तिकुञ्ज में अत्यन्त सादगी के साथ, अपनी यज्ञ-दीपयज्ञ की उदात्त संस्कार परम्परा के अनुरूप मनाया।

श्रद्धेया जीजी, श्रद्धेय डॉक्टर साहब के जीवन के यह 50 वर्ष केवल वैवाहिक जीवन की यात्रा नहीं है, अपितु एक महान उत्तरदायित्व को सँभालने के लिए तप, त्याग, समर्पण, सहनशीलता की साधना के 50 वर्ष हैं। यह यज्ञीय जीवन के 50 वर्ष हैं। विवाहोपरान्त परम पूज्य गुरुदेव ने योगेश्वर श्रीकृष्ण की तरह गीता सुनाते हुए उन्हें सांसारिक आकर्षणों की निःसारता का बोध कराया। विदेश में बड़े पैकेज के लिए नहीं, स्वदेश के उत्थान के लिए बड़े काम करने की उमंग जगाई। फिर अपने सान्निध्य में 12 वर्षों तक तपाया-गलाया और इतना योग्य बनाया कि इस युग में स्वामी विवेकानन्द की तरह देव संस्कृति का विस्तार करने में वे समर्थ हुए।

3 जून 2021 अपने श्रद्धेय द्वय के उस तप, त्याग, तितिक्षा का स्मरण करने और अपने जीवन में धारण करने का विशेष दिवस था, जिसने परम पूज्य गुरुदेव और परम वन्दनीया माताजी के महाप्रयाण के पश्चात् इस मिशन को न केवल सँभाला, बल्कि कई गुना आगे बढ़ाया। आज श्रद्धेया जीजी के व्यक्तित्व में परम वन्दनीया माताजी की छवि दिखाई देती है। श्रद्धेय द्वय के स्नेह-संवेदनाओं से भरे दो शब्द और उनकी कृपादृष्टि लोगों के कष्ट-कठिनाइयों का समाधान करती नज़र आती है। समस्त विश्व ने उनके विवाह की स्वर्ण जयंती मनाते हुए उन्हें उस जीवन्त मशाल के रूप में देखा जिसके प्रकाश से करोड़ों श्रद्धालु नई हिम्मत पाते हैं, हौसले बुलन्द होते हैं और अंतःकरण में पीड़ा-पतन निवारण के लिए अपना जीवन समर्पित कर देने की उमंग उभरती है।

सादगी से मनाई स्वर्ण जयन्ती

कोरोना सम्बन्धी दिशा-निर्देशों को देखते हुए श्रद्धेय डॉक्टर साहब, श्रद्धेया जीजी ने अपना विवाह दिवस अत्यंत सादगीपूर्वक मनाया। प्रातःकाल परिवारी जनों के साथ यज्ञ किया। सभी ने गायत्री महामंत्र एवं महामृत्युञ्जय मंत्र के साथ आहुतियाँ अर्पित करते हुए दोनों के स्वस्थ, यशस्वी, दीर्घ जीवन की प्रार्थना माँ गायत्री एवं पावन गुरुसत्ता से की।

श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर साहब विवाह दिवस मनाते हुए

प्रातःकाल भेंट-परामर्श के नियमित क्रम में शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, ब्रह्मवर्चस के अंतेवासी कार्यकर्त्ताओं ने तथा गायत्री विद्यापीठ के विद्यार्थियों ने पुष्पगुच्छ, शुभकामना पत्र आदि भेंट कर अपने अंतस् के उल्लास को व्यक्त किया, आशीर्वाद लिए।

कई देशों में मनाई गई श्रद्धेय द्वय के विवाह की स्वर्ण जयन्ती

श्रद्धेया शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर साहब के विवाह की स्वर्ण जयन्ती विश्व के कई देशों में मनाई गई। अमेरिका में गयत्री चेतना केन्द्र लॉस ऐंजल्स, शिकागो ह्यूस्टन, न्यूजर्सी के परिजनों ने वर्चुअल दीपयज्ञ किया। सर्वश्री मनसुख भाई, किरन भाई, दीपक भाई, इन्द्रजीत भाई, सुकेशी बहिन, नलिनी पण्ड्या ने शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

सिंगापुर की स्नेहा सुथार ने वर्चुअल स्वाध्याय एवं जप के साथ प्रार्थना की। फीज़ी की जागृति बहिन, न्यूज़ीलैण्ड की मीना बहिन एवं परिजनों ने तथा ऑस्ट्रेलिया में सिडनी से श्री आनन्द जायसवाल, नीरज राम, मनीषा शर्मा और ब्रिसबेन, पर्थ, मेलबर्न के परिजनों ने विवाह दिन विशेष उमंग और उल्लास के साथ मनाया।

दक्षिण अफ्रीका के गायत्री आश्रम में भी विवाह दिवसोत्सव मनाया गया। मोजाम्बिक-मपूतो गायत्री परिवार के आरती सुनील पण्ड्या, कनाडा से राकेश शर्मा, सुधीर देसाई, मधुभाई, चेतन देसाई, शरद पूर्णिमा पटेल, मलेशिया के कुमार संभवम, अमेरिका के नरेन्द्र देसाई, महेश भट्ट, किरण पटेल सहित अनेक लोगों ने इस शुभ दिन पर श्रद्धेय द्वय के यशस्वी, स्वस्थ जीवन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए व्यक्तिगत रूप से शुभकामनाएँ भेजी हैं। कनाडा के वीनिपेग, एडमंटन, वेनकुवर और केन्या, तंजानिया से भी अनन्य आत्मीय परिजनों ने श्रद्धेय को शुभकामनाएँ भेजीं। खाड़ी देश के व्हाट्सएप ग्रुप में बड़ी संख्या में शुभकामनाएँ दी गईं।

इक्ष्वाकु रीटा ओझा एवं डॉ. नीलम गुप्ता ने श्रद्धेय द्वय का अभिनन्दन किया। यू.के. से डॉ. दिनेश, सुरेखा बेन, इला बेन, मीनाबेन, प्रतिमा, देविका, योगेश, नीरू, हंसिका, निर्मलाबेन, पिनाकी, दीपक जोशी, नम्रता, मंगूभाई, तृप्ति, योगेश भाई श्रद्धेय डॉक्टर साहब एवं श्रद्धेया जीजी को अपने संदेश भेजकर अपनी सद्भावना और मिशनरी आस्था का परिचय दिया। है।

जूना पीठाधीश्वर स्वामी अवधेशानन्द गिरि, निरंजनी पीठाधीश्वर स्वामी कैलाशानन्द गिरि, भारतीय अखाड़ा परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमहंत नरेन्द्र गिरि, सहित अनेक संतो एवं राजनेताओं ने श्रद्धेय द्वय को अपनी शुभकामनाएँ भेजी हैं।

ऐतिहासिक कार्य

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी अपनी विशिष्ट समाज सेवा के कारण अनेक अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित किए गए, लेकिन उनके कुछ कार्य युग निर्माण आन्दोलन के इतिहास में अविस्मरणीय रहेंगे। वे कार्य हैं-

- अखिल विश्व गायत्री परिवार का वैश्विक विस्तार।
- युवा युगनायक का आदर्श प्रस्तुत करते हुए नई युवा पीढ़ी में श्रद्धा, साधना, समर्पण भाव का संचार कर उन्हें मिशन के लिए समर्पित करना।
- देव संस्कृति विश्वविद्यालय की ऐतिहासिक स्थापना और केवल पद ही नहीं, बल्कि कुलपिता के रूप में अपने प्रेम, प्रेरणा, प्रोत्साहन से हज़ारों विद्यार्थियों को ऋषि परम्परा के अनुरूप आदर्श जीवन में ढालना, शिक्षातंत्र को नई दिशा देना।

संकल्प

विवाह की स्वर्ण जयन्ती के विशेष अवसार पर श्रद्धेय डॉक्टर साहब एवं श्रद्धेया जीजी ने जैसा जीवन अब तक जिया है, वैसे ही जीवन का हर पर मानवता के उत्थान के लिए और समाज में व्याप्त पीड़ा-पतन निवारण के लिए समर्पित करने का संकल्प दोहराया।

वृद्धाश्रम में बुज़ुर्गों की सेवा

भारत की सैकड़ों शाखाओं ने दीपयज्ञ का आयोजन कर श्रद्धेय डॉ. साहब एवं श्रद्धेया जीजी के विवाह की स्वर्ण जयन्ती मनाई। इसी क्रम में नवयुगदल युवा प्रकोष्ठ टाटानगर ने गायत्री ज्ञान मंदिर भालूबासा में दीपयज्ञ किया। युवा कार्यकर्त्ताओं ने वृद्धाश्रम बाराद्वारी के असहाय लोगों को भोजन कराया।

सातवाँ अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 》 **पूर्व तैयारियों को लेकर भारत सरकार की अंतर-मंत्रालय बैठक**

गायत्री और योग अन्योन्याश्रित हैं। - शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

बैठक ऑनलाइन हुई,
देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने हिस्सा लिया,
अध्यक्षता केन्द्रीय मंत्री माननीय किरेन रिजिजू ने की।

यह लगातार दूसरा वर्ष है जब 21 जून, अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह ऑनलाइन ही सम्पन्न होगा। समारोह की योजना बनाने के संदर्भ में आयुष मंत्रालय ने 24 मई 2021 को एक अंतर-मंत्रालय बैठक की मेजबानी की, जिसकी अध्यक्षता केन्द्रीय मंत्री किरेन रिजिजू, विभिन्न मंत्रालयों के वरिष्ठ अधिकारियों और योग

विशेषज्ञ महानुभावों/ हितधारकों ने की। हरिद्वार से देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने बैठक में भाग लेते हुए अखिल विश्व गायत्री परिवार के विचारों को साझा किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने सातवें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के दिन गायत्री जयन्ती और गंगा दशहरा के संयोग की चर्चा की। उन्होंने कहा कि गायत्री और योग का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। गायत्री उपासना, साधना के बिना जीवन में समत्व की कल्पना नहीं की जा सकती। जीवन में समत्व की साधना के बिना योग-सिद्धि संभव नहीं। इसलिए जीवन के उत्कर्ष एवं वैश्विक सुख, शान्ति, प्रगति के लिए गायत्री उपासना-साधना की ही जानी चाहिए।

इस विचार का पर्यटन मंत्रालय के अधिकरियों ने भाव भरा स्वागत किया और कहा कि गायत्री मंत्र अनुपम है। विश्व समुदाय में मंत्रों की एक अहम गरिमा और आकर्षण है।

केन्द्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने सभी प्रमुख हितधारकों को धन्यवाद देते हुए बैठक का समापन किया और कहा कि अधिक से अधिक लोगों को योग के साथ जोड़ने के प्रयास किए जाने चाहिए।

वृक्षारोपण 》 **शान्तिकुञ्ज स्काउट-गाइड का अभियान**

स्वस्थ प्रकृति ही हमें स्वस्थ्य एवं आनन्ददायक जीवन प्रदान कर सकती है

21 मई को देव संस्कृति विवि के प्रतिकुलपति आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के नेतृत्व में शान्तिकुञ्ज जनपद स्काउट गाइड ने पौधोरोपण अभियान का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने वृक्ष-वनस्पतियों को जीवन का पर्याय बताया। उन्होंने कहा कि स्वस्थ प्रकृति ही हमें स्वस्थ एवं आनन्ददायक जीवन प्रदान कर सकती है।

भारत स्काउटस गाइड उत्तराखंड द्वारा पौधारोपण का कार्यक्रम कोरोनाकाल

पौधारोपण करते स्काउट-गाइड अधिकारी

की गाइड लाइन के अनुरूप हुआ। शान्तिकुञ्ज जनपद के स्काउट्स, रोवर एवं अन्य पदाधिकारियों ने देवयोनि के रूप में माने जाने वाले पीपल के पौधे रोपे। शान्तिकुञ्ज जनपद के जिला संगठन आयुक्त मंगल सिंह गढ़वाल, रितेश कुमार, भूषण, प्रीतम महेश, मनोज आदि ने पौधे लगाये।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 12.6.2021
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23